RAAM KAHE

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. हरि तुम मग मो को दिखलाओ। 1

2. कर दो पार हरि मोहि भव से। 1 3. हरि तुम राखो लाज हमारी। 2

4. हरि मैं शरण तुम्हारी आऊँ। 2

5. आया नहीं सुनाने नगमा। 3

6. राम नाम तू जप ले मनुआ। 3

7. गिरते यहाँ हम जा रहे हैं। 4

8. जीवन के कुछ पल गुजार कर। 4

9. पा सके नहीं प्रभु तुमको हम। 5

10. तुम रे बिना भटके सदा ही। 5

11. मैं घूमता वीयावान में। 6

12. सुख तुझ में है छिपा। 6

13. हरि तुम मुझ को नाहिं विसारो। 7

14. हम ढूंढ़ते तुमको। 7

15. हरि तुम बिछुड़े चैन न पायो। 8

16. राम नाम मेरे धुन भाई। 8

17. लाज रखो हरि मैं शरणाई। 9

18. लिखूँ तुझे पाती ना जाने। 9

19. तेरा हम श्रृंगार करें है। 10

20. चाहें हम वह ना होता है। 10

21. भटके जग में दुख को पावे। 11

22. मूर्ति तुम्हारी प्रभु बनाऊँ। 11

23. हे ईश्वर तुम जग के पालक 12

24. हरि तुम बिछुडे कुछ न सुहावे। 12

25. ध्यान ईश का सदा करो मन। 1326. द्वार खड़े हम तुझे पुकारे। 13

27. रिमझिम रिमझिम नयना बरसें। 14

28. ईश्वर मुझे बना ले अपना। 14

29. कुछ गीत सुना प्रभु मैं पाऊँ। 15

30. राम राम कह चलते जायें। 15

31. तू क्यों रूठा है दर्द छिपा। 16

32. तुम बिन चैन हरि नहिं आये। 16

33. हरि तुम आओ प्यार बढ़ाओ। 17

34. घट घट में तुम बसते स्वामी। 17

35. पता न ईश्वर कहाँ छिपे तुम। 18

36. आ जाओ मेरे सांवरिया। 18

37. गीत गूंजते फिर खो जाते। 19

38. हे हरि कृपा करना हम पर। 19

39. हरि जप मनुआ एक सहारा। 20

40 . लागे ना जियरा यह डोले। 20

41. अश्रु ढुलकते रहे नयन से। 21

42. चाहा बहुत तुम को यहाँ। 21

43. प्रीति लगा न जग मेले से। 22

44. प्रीति न तोड़ो पाँव पड़ू मैं 22

45. हरि बिना हम कहाँ को जावे। 23

46. हरि नहिं छोड़ो चरण पड़ू मैं। 23

47. ईश तुम से प्रीति तोड़। 24

48. शरण मुझे हे हरि तुम रख लो। 24

49. खोजा तुमको हरि पा ना सके। 25

50. हरि तुम बिन न कोई सहारा। 2551. हरि तेरी ही महिमा गाँऊ। 26

52. हे हरि तुम हो नाथ हमारे। 26

53. राम राम पूजूँ मैं निशदिन। 27

54. द्वारे तेरे चलकर आऊँ। 27

55. कितनी पीड़ा दर्द यहाँ पर। 28

56. जीवन के तुम सुप्रभात हो। 28

57. हे हरिहर मैं हार गया। 29

58. जीवन नदिया बही जा रही। 29

59. ले चल मुझे तू नदिया पार। 30

60 . कह न पाता हिय कसक की। 30

61 पथ पर तेरे सदा चलूँ प्रभु। 31

62. यह अश्रु गिरे जो धरती पर। 31

63. गीत तेरे ही चुने है। 32

64. कण-कण में तुम ईश बसे हो। 32

65. हम तेरे बालक हैं प्रभु जी। 33

66. नहीं सिद्धि की मुझ को चाहत। 33

67. गिरती उठती यहाँ वासना। 34

68. करें अर्चना हाथ जोड़े खड़े हैं। 34

69. उस पार क्षितिज के पता न क्या। 35

70. खेल तेरा नाच मेरा हैं। 35

71. जो भी है वह सब सुन्दर हैं। 36

72. सरिता सागर में गिरने को। 36

73. सांस सांस में तुझे जपे हम। 37

74. खिलने से पहले मुर्झाये। 37

75. एक गम हो तो कहें हम। 3876. गीत बनाये प्रभु हम तेरे। 38

77. हारता हूँ जब जहाँ में। 39

78. भगवन तुम्हारी लीला का। 39

79. सुख से जीने की आशा में। 40

80. स्वारथ की मिट्टी में मिलकर। 40

81. हरि भज हरि भज वह दे सुवास। 41

82. उठती गिरती लहरें देखो। 41

83. जीवन में कितने जाल बुने। 42

84. इस सारे जग के रखवाले। 42

85. याद करें प्रभु रोवें अंखियां। 43

86. आवाज तुझे देते। 43

87. तुम्हारा नाम लेकर हरि। 44

88. मेरे सुख तुम्ही भगवन। 44

89. भज गोविन्द तुझे प्रभु पायें। 45

90. तेरी लीला तू ही जाने। 45

91. तुझे हम याद करते हैं। 46

92. हरि तेरे ही गुण गाऊँ मैं। 46

93. कहाँ छिपे तुम मेरे मोहन। 47

94. हरि तुम बिन न कोई सहारा। 47

95. घूमें हम कितनी जगह यहां। 48

96. कितना बीता समय यहाँ पर। 48

97. हरि तुम बिन न कोई सहारा। 49

98. नयना बरसें तुम को तरसे। 49

99. जग के रखवाले ओ मोहन। 50

100. जाऊँ कहाँ जगत के पालक। 50

1

हरि तुम मग मो को दिखलाओ, अन्तस में आ जाओ।

हरपल तुझे सदा हम सुमरे, जगा प्यास को जाओ।

गुणगान करें बीते जीवन, ना ईश्वर भटकाओ।

चलकर पहुँच न पायेंगे हम, चल कर तुम आ जाओ।

सदा जनम का रहा भिखारी, देखो झोली खाली।

गिरते रहते नीर सदा ही, सुन ले मेरे माली।

सारे जग के तुम सर्जक हो, मुझसे तुम क्यों रुठे ?

हाथ जोड़ कर करुँ अर्चना, दया मुझे दे दीठे।

थक कर हारा हुआ मुसाफिर, आ जा मांझी मेरा।

निशदिन आंखे तुझे निहारे, जीवन बाजी हारा।

कुछ पल जीवन के है बाकी, सुना मुझे बन्शी को।

पतझड़ में आ जाये बहार, पार करुँ दुनिया को।

2

कर दो पार हरि मोहि भव से, शरणागत तुम रख लो राम।

व्याकुल आँखे ढूंढ रही हैं, तुझे पायें हम कैसे राम ?

पीड़ा का सागर बहता है, हरपल मनुआ घबराता है।

लाज रखो तुम मेरे स्वामी, अंधियारे से डर लगता है।

मात-पिता गुरु सखा तुम्हीं हो, इन आंखों की ज्योति तुम्हीं हो।

चल पायेंगे नहीं कृपा बिन, प्रभु तुम ही मेरे सब कुछ हो।

टप-टप गिरते आंसू देखो, ना अनाथ कर मुझको छोड़ो।

द्वार तेरे हम पड़े हुए हैं, ईश्वर मुझसे मुख न मोड़ो।

गुनी यहाँ सब पूजा करते, तुझको हैं दिन-रात मनाते।

हूँ मतिमन्द न विधि को जानू, त्वक-त्वक कर बस हम रोते।

अपनी दया से वंचित न कर, अपने चरणों में प्रभु रख ले।

जीवन की काली रातों में, दे प्रकाश तू हमें बचा लें।3

हरि तुम राखो लाज हमारी, भीगी अंसुओं से मैं सारी।

तुझ तक पहुँचे बल नहिं हममें, ईश्वर चल-चल कर मैं हारी।

जाऊँ कहाँ मग नहीं दीखे, विधि ना जानूं कैसे रीझे।

अंखिया मेरी भर-भर आवे, पर निष्ठुर तू क्यों ना रीझे ?

बेमोल ढुलकते हैं मोती, जग में कोई भी मोल नहीं।

है पास नहीं हमरे कुछ भी, क्या दे हमको यह ज्ञान नहीं।

तुझे देवता पाये कैसे, जीवन को सुलझाये कैसे ?

रो-रो अंखियां भई बाबरी, प्यार तुम्हारा पाये कैसे ?

कृपा करो तुम हे दुख-भंजक, हम तेरी ओर निहार रहे।

दीप जलादो मेरे हिय में, यह प्राण तुझे है तड़ रहे।

आशा और निराशा में पड़, सारा जीवन यह बीत गया।

द्वार तुम्हारे पड़ा हुआ हूँ, ईश्वर मैं तो अब हार गया।

4

हरि मैं शरण तुम्हारी आऊँ, इस जीवन को सफल बनाऊँ।

भटकूं ना इस जग के अन्दर, तुझ पथ पर चलता ही जाऊँ।

धूप दीप नैवैद्य नहीं है, पूजा की भी विधी नहीं हैं।

कांप रही है थर-थर थाली, झर-झर आंखे बस झरती हैं।

मुझे न छोड़ कहाँ जाये हम, मत बिछुड़ों ना दो यह तुम गम।

सदा करें गुणगान तुम्हारा, कटे सफर यह तुझमें ही रम।

हे आराधय तुम्हें मनावे, आस यही सब दुख कट जावे।

निष्ठुर प्रीति न मुझसे तोड़ो, रो-रो गीत यही बस गावे।

बहती लहरें सागर में हैं, बना लहर मुझको क्यों भूला ?

अन्धाकार को दूर करो प्रभु, भ्रम को काटो मैं हूँ भूला।

विनय को स्वीकार करो प्रभु, कैसे मैं जिय को दिखलाऊँ ?

*ढूंढ रही हैं तुमको अंखियां, तुम बिन अब मैं न रह पाऊँ।*5

आया नहीं सुनाने नगमा, जीया रोय जगत में भटका।

हारी थकी निहारें अंखियां, दीप बुझा है मेरे दिल का।

हरपल मेरा धयान लगाऊँ, कैसे तुम बिन मौज मनाऊँ ?

कितने सावन बीत गये हैं, तरसा तुम बिन गिर-गिर जाऊँ।

हे आराधय करुणा सागर, नीर गिर रहे मेरे झर-झर।

खोजूँ कहाँ पता ना तेरा, जग में तू ही सबसे सुन्दर।

कसक कलेजे से निकले ना, छिपे कहाँ ओ मेरे छलिया।

मात-पिता सर्जक तुम मेरे, पार करुँगा कैसे डगरिया।

मुझे सहारा दे दो ईश्वर, अन्धाकार है कुछ दीखे ना।

बहते नीर प्रभु तुम लख लो, दया बिना तुम पग पाऊँ ना।

हाथ जोड़ कर द्वार खड़ा हूँ, अज्ञानी हूँ बस रोता हूँ।

तेरे इंगित पर सब कुछ है, रुठो ना मैं विवश हुआ हूँ।

6

राम नाम तू जप ले मनुआ, दो दिन का मेला जग सपना।

ईश्वर से तू प्रीति लगा ले, किसको सदा यहाँ है रहना।

दो दिन के जीवन को लेकर, फिरें यहाँ हम इतराते से।

तनिक वेदना से पीड़ित हो, नीर गिराते हैं अंखियों से।

तुझसे ही प्रभु वर को पाते, हाय तुझे ही हम विसराते।

हम ठगनी माया में पड़ते, ईश्वर हमको खूब नचाते।

कह-कह हार गया जागा ना, सुख भी जीवन में पाया ना।

रहा भटकता जीवन भर ही, अपने प्रियतम को पाया ना।

प्यासी रही मीन जल भीतर, तुझ भीतर मैं भी प्यासा हूँ।

कैसा तेरा चक्र चल रहा, नहीं समझ तुझको पाता हूँ।

जलती शमा पतंगा आता, प्रीति लगा कर वह मिट जाता।

*इतना सा ही खेल जगत में, नहीं समझ मेरे क्यों आता।*7

गिरते यहाँ हम जा रहे हैं, दीखता कुछ भी नहीं हैं।

तुम ना रुठो मेरे प्रभु जी, तुम बिना हम कुछ नहीं हैं।

तुमको बसाये इस नयन में, पार इस भव को करेंगे।

चाहे आये फिर ना आये, चाह नहीं विसरायेंगे।

अज्ञानी हम सर्जक तुम हो, यह गीत मेरे रो रहे।

अपना यह दिल किसे दिखाये, हे ईश तुम भी सो रहे।

नयन में है मूरत तुम्हारी, जग की लूँ सारी गारी।

तुम नाता न मुझसे तोड़ना, मैं ईश जगत से हारी।

तेरी ही यादों में खोकर, हम भूलते जग के जहर।

करना ही नहीं शिकवा हमें, यहाँ बही जा रही लहर।

विनती स्वीकार करो प्रभु जी, तुम ईश न मुझसे विसरो।

यह भान रहे हैं संग मेरे, चाह मेरी पूर्ण करो।

8

जीवन के कुछ पल गुजार कर, ना जाने कित खो जायेंगे।

तुझे रिझा ना पाये निष्ठुर, हम रोते-रोते जायेंगे।

गया बसन्त कोयल न कूकी, जियरा रोया नींद न टूटी।

फंसा रहा मैं जगत चक्र में, गई बहारे किस्मत खोटी।

कित जायेंगे पता नहीं हैं, खो सुख पाया नहीं एक पल।

जलता रहा सदा जीवन में, नहीं मिटी यह दुख की हलचल।

दुख के नगमें क्या कहतें हैं, किस सुख का सृजन करते हैं।

बन वैरागी जी ले जग में, ज्योति जला भूले जिसको है।

नश्वर प्रीति यहाँ क्षण भंगुर, वह ले जाता है हमें किधार।

खोजे आंखे उसी एक को, नयन बहायें आंसू झर-झर।

चलते-चलते खो जाये हम, तुझे नहीं प्रभु विसराये हम।

एक सहारा तू ही मेरा, भुला सकें जिससे अपने गम।9

पा सके नहीं प्रभु तुमको हम, यह दर्द लिये ही जायेंगे।

थक गये यहाँ हम चलते-2, ना पता कहाँ गिर जायेंगे ?

कर-कर यादें अखियां रोई, तू नहीं पसीजा निर्मोही।

रहे ढुलकते आंसू हमरे, सुधि क्यों हमरी प्रभु ली नाही।

प्रीति तुझी से प्रभु करते हैं, याद तुझे कर मर जायेंगे।

जा रहा डूबता यह तारा, फिर कभी नहीं तड़पायेंगे।

ना मना सके प्रभु हम तुमको, हम हाय जिन्दगी से हारे।

रुठी हमसे सारी खुशियाँ, क्या भाग्य ले आये प्यारे ?

गीतों को लिख रोया जग में, यह हाय शुन्य में सब खोये।

ऐसी भी हमरी करनी क्या, हम विलख-विलख कर प्रभु रोये।

अंसुओं में प्रीति छिपी प्रभु लो, तुम एक बार हमको लख लो।

जीवन का होवे यज्ञ पूरा, मेरे जीवन अब तो सुन लो।

तेरे बिना भटके सदा ही, सुपने सजाते ही रहे।

नहीं पा सके वह मुकाम हम, पाते तुझे रोते रहे।

जो आग थी इस दिल में लगी, जलती रही ना बुझ सकी।

बरसात आंसू की हुई है, बिन चैन तुझ ना पा सकी।

रुठो नहीं हे ईश तुम भी, नहीं तुम बिन कुछ दीखता।

चलने को मैं चला जा रहा, मग में अंधोरा दीखता।

हिय में जला दो दीप मेरे, कटे तम जो मुझे घेरे।

नहिं देर करना ईश मेरे, प्राण यह दिन-रात टेरे।

हम खोज क्या ले चल रहे हैं, तुम बिना हम रो रहे हैं।

हम अजनबी से इस जगत में, आस तुमसे रख रहे हैं।

प्रभु प्यास है जल तू पिला दे, नीर को स्वीकार कर ले।

*इस बहते तिनके को प्रभु जी, दे सहारा मुक्त कर ले।*11

मैं घूमता वीयावान में, कुछ दीखता हमको नहीं।

तेरा सहारा खोजता हूँ, पर तू नजर आता नहीं।

मैं देखता आकाश चुप है, सब ही कहाँ पर जा रहे।

है कौन सी वह प्यास लेकर, इस सृष्टि में है चल रहे।

भाग्य लेकर कैसा चलते, चाहा मिलें पर न मिलते।

जैसे नदी के छोर दो हैं, पर ना मिलें रहे लखते।

नभ तप्त धारती देखता जब, उसका हृदय जाता पिघल।

ईश्वर ना पत्थर तुम बनो, मेरे बहाते नयन जल।

हम तो विरह के गीत गाते, इस जग में खो जायेंगे।

यह प्यास भी हमें है प्यारी, चाह है ना भुलायेंगे।

चलते रहे खोजे तुझे हम, भूले तुझे न एक पल।

अब शाम ढलती जा रही है, मेरे तुम्ही हो एक बल।

12

सुख तुझमें है छिपा, तुम्ही हुये मुझसे रुका।

दुख हरन मंगल करन, नहीं बनो तुम बेका।

लखो हमें ईश तुम, दर्द लेकर जायेंगे।

थके चलते-चलते, कित पता गिर जायेंगे।

ढूंढता अन्धोरा, मारग भी दीखे नहीं।

तुझ किरन मिल जाये, डगर कठिन है फिर नहीं।

तुझ करुणा का भिखारी, जागूं मैं रात सारी।

बन नहीं निर्मोही, इस जगत से प्रभु हारी।

सृष्टि स्वामी तुम्हीं, क्यों छोड़ छिप गये कही ?

अज्ञान से है हम घिरे, गिरे गर्त में हम नहीं।

नयन से अश्रु गिरते, बस तुमको याद करते।

*चरणों में बसा लो, कुछ ना हम और कहते।*13

हरि तुम मुझको नाहिं विसारो, चरण पड़ूं मैं तेरो।

मोहि तुम बिन कुछ ना सुहावे, ना मुझसे मुख फेरो।

अंखियां झर-झर नीर बहावें, मिलन घड़ी कब आवे ?

आग लगी हिय में हे प्रभु जी, तुम बिन हम क्यों जीवें ?

नैना हरदम बाट निहारें, तुम छवि ही मन भावे।

अन्धाकार से ढकी चदरिया, तू ही ज्योति जगावे।

तुमको जपता फिरुँ जगत में, जग में ना भरमावे।

रोते नयना तुझे पुकारें, कूल न कोई पावें।

जीवन के दिन कट जायेंगे, रहूँ तुझी में डूबा।

करुँ अर्चना नहीं भुलाऊँ, सबसे मन है ऊबा,

नीर गिरे हिय में बस जाओ, पल भर ना विसराओ।

खेवट मेरी नैया के तुम, मुझको पार लगाओ।

14

हम ढूंढते तुमको, छिपते क्यों फिर रहे हो ?

ना अश्रु यह रुकते, सब मेरे तुम हुए हो।

अंसुओं की दे कसम, बिन मोल पर यह बहते।

कैसे रिझायें हम, ना पास कुछ भी रखते।

सीने में दर्द है, बस तुम नजर हो आते।

दीखे किसे पीड़ा, जब तुम ही रुठ जाते।

बीतती हैं घड़ियां, पागल यह दिल हुआ है।

क्षमा करना मुझको, नहीं गुनाह किया है।

दीपक सा मैं जलूं, तुमको भुलाऊँ ना पल।

मतिमन्द हूँ बालक, अंखियां चढ़ायें है जल।

अर्चना हम करते, होवे विदा संसार से।

*कहते वह सुर नहीं, कर ना वंचित प्यार से।*15

हरि तुम बिछुड़े चैन न पायो, इस जग में प्रभु मैं भरमायो।

किसकी आंखों में मैं झांकू, दर्द तड़ता मैंने पायो।

निशदिन तेरी करुँ आरती, नित मेरा श्रृंगार सजाऊँ।

रहुँ तेरे दर हर पल प्रभु जी, विलग नहीं तुझसे हो पाऊँ।

जग में घूंमू खोज लिये क्या, रोये नयना तुम बिछड़ो ना।

अपना मुझको दास बना लो, कर अनाथ प्रभु तू मुझको ना।

चलू डगर पग मोरा कांपे, जीया तुमको मिलने तरसे।

पतझड़ देखे आये बहार, क्यों न रिमझिम-रिमझिम बरसे।

बस जाओ तो कटे रूर यह, अन्धाकार में दीप जले यह।

तुम बिन और यहाँ क्या रक्खा, अज्ञानी को वर दे दे यह।

पांव पड़ूं हरि नहीं विसारो, झरते नयना इनको लख लो।

रो-रो अपनी व्यथा सुनाते, आया शरण तुम्हारी रख लो।

16

राम नाम मेरे धुन भाई, हरि तुम मेरो बनो सहाई।

मैं हूँ प्रभु जी दास तुम्हारा, राखो तुम मोही शरणाई।

चक्र यहाँ तेरा चलता है, वश न किसी का भी चलता है।

नामी राजा बन जाते हैं, खाक वही तन फिर बनता है।

ज्ञानी भी तुमको जपते हैं, जपते-जपते खो जाते है।

नहीं जगत में शान्ति तुम बिना, बिन तेरे रोते रहते हैं।

अखियां हर पल तुम्हें निहारें, ना निर्मोही बनना प्यारे।

विरह अग्नि जो लगी हिया में, भस्म होऊँ न बिछुड़ो प्यारे।

कर्मों के बंधान में बंधाकर, बने भ्रमित हम घूम रहे हैं।

अवश यहाँ देखो प्रभु हम है, चाह मुक्ति की तक़ रहे हैं।

चरणों में सिर रख लेने दो, रो-रो अपनी व्यथा सुनावे।

*जी भर मुझको रो लेने दो, और नहीं कुछ करना आवे।*17

लाज रखो हरि मैं शरणाई, जीवन दाता तुम सुखदाई।

भूले तुम्हे यहाँ दुख पावें, सबकी सुनता तू ही सांई।

प्यार तुम्हारा हम जो पावे, सारे संकट फिर कट जावें।

तू ही सबका पालक प्रभु जी, सारे जग को नाच नचावे।

आ मिलो मोहि प्राण पुकारें, कट जाये भव बन्धान सारे।

जग का कण-कण तुममें घूमे, सुधि ले लो तुम मेरे प्यारे।

एक छत्र है राज तुम्हारा, रो कर कहते दुखड़ा सारा।

कैसे रीझो ना हम जाने, गिरते नीर काहे विसारा।

ठोकर खाऊँ गिर गिर जाऊँ, सदा सहारा तेरा चाहूँ।

टप टप गिरते आंसू कहते, जीवन तुझ बिन मै ना चाहूँ।

द्वार तुम्हारे ईश खड़ा हूँ, कहूँ तुझे क्या घट रीता है।

बन कर मेघ बरस जाओ तुम, बस तू ही मेरा सुपना है।

लिखूँ तुझे पाती ना जाने, रोये अंखियां ना माने।

भटका पर ना मिला किनारा, मफ करो तुम दीवाने।

तेरी मूरत है अति सुन्दर, बसे हुए घट के अन्दर।

फिर भी हमको नजर न आये, खेल खिलाये गिन-गिन कर।

नील कण्ठ शिव नाम तुम्हारा, पिया हलाहल तू सारा।

भूत प्रेत नाचे तुझ सम्मुख, विषधार घूमे ना हारा।

शेष नाग शैया पर सोकर, दुख से तुम हुए बेखबर।

ऐसा ज्ञान कहाँ से लायें, रोते दुख को पग-पग पर।

मुझको कहना है हे ईश्वर, तेरी सन्तान सभी हैं।

दुख दरिया से हमें निकालो, नहीं ज्ञान से पूरित हैं।

नयना रिमझिम-रिमझिम बरसे, चाह प्यार पाने तरसे।

*छिपे कहाँ वन्शी के स्वामी, बजा इसे जो हिय हरषे।*19

तेरा हम श्रृंगार करे हैं, छोटे-छोटे हाथों से।

तू ही जग का प्रभु स्वामी, मन बहलाये इन सबसे।

भोग लगावे हम सुख पावे, दाता तुम सारे जग के।

मग में नयना राह निहारे, प्राण हुए तुम हर घटके।

ढूंढू जग में तुझे न पाऊँ, नीर बहाऊँ अंखियों के।

बेदर्दी हम तुझे पुकारे, दर्द हरो तुम ही सबके।

अज्ञानी बन भटक रहे हैं, ज्ञान बिना दुख है बरसे।

दीप जला हिय में मेरे प्रभु, जीया मेरा है हरषे।

संग मेरे तू तुझे न जाने, बने फिरै हम दीवाने।

रोये अंखियां तुम बिन सजना, भीख हमें दे मस्ताने।

अन्तहीन न कोई किनारा, ले जाये कित यह धारा।

चरण पड़ा हे ईश संभालो, इस जग में मैं हू हारा।

चाहें हम वह ना होता है, जो प्रभु चाहे वह होता है।

यदि जान सके हम जीवन में, क्या रोना फिर जीवन में हैं ?

जड़ चेतन सब समझ रहे यह, चल मंजिल को पार कर रहे।

कौन दया पर निर्भर हम है, आंख न खोलें खूब रो रहे।

बु(मान कोई मूरख है, भिन्न-भिन्न जग में सूरत है।

दुख-सुख की छाया में पलकर, जीव यहाँ जग में भटके है।

अपना-अपना दर्द लिये सब, बने बाबले घूमे जग में।

भूख-प्यास की ज्वाला में जल, पाप-पुण्य को भूले मग में।

हे ईश्वर पथ हमें दिखा दो, प्रेम डगर पर हमें चला दो।

अज्ञानी हैं भटक रहे हैं, ज्योति-पुंज तुम ज्योति जला दो।

योग्य नहीं हम बालक तेरे, लगा रहे हैं दुख के ढेरे।

*चरणों में सिर रख रोने दो, मिट जाये जीवन के घेरे।*21

भटके जग में दुख को पावे, वह ही सबका पालन हारा।

हम ईश्वर को ना विसरावे, करुणामय जीवन आधारा।

किन-किन आंखों में मैं झांकू, इस दिल की प्यास नहीं जायें।

कैसे दर्द बता मैं आंकू, जियरा रोये तुम ना आये।

अनजाने जग में मैं घूमू, धाड़के यह दिल क्या मैं बोलूं।

तुमसे हाय बिछुड़कर प्रियतम, चाह यही अँखियां ना खोलूं।

नयनों की धारा है बहती, साथ हमें वह ना ले जाती।

अज्ञात बनी यह खो जाती, ना चुभन कभी दिल की जाती।

बरसे मेघ खिले हरियाली, बिन तेरे सब लागे खाली।

मेरे तो श्रृंगार तुम्ही हो, कैसे मिटे नयन की लाली ?

मनुआ शरण उसी की जाओ, ना जग से अब प्रीति बढ़ाओ।

दो पल जीवन के है बाकी, जाना जहाँ न उसे भुलाओ।

22

मूर्ति तुम्हारी प्रभु बनाऊँ, इन हाथों से इसे सजाऊँ।

भावों की गंगा में बहकर, झर-झर मैं हरि नीर गिराऊँ।

अगम अगोचर जग के स्वामी, कहाँ नहीं तुम अन्तर्यामी।

तुमको मैं मूरत में निरखूं, पार पा सकूं ना हे स्वामी।

अपनी दया बनाये रखना, याद तुझे कर रोये नयना।

गये कहाँ छिप ओ निर्मोही, नहीं आ रहा मुझको चैना।

जग की ठोकर खा-खा कर प्रभु, रोता दिल यह तुझे पुकारे।

तुमको नैना तरस रहे हैं, बन जाओ तुम ईश सहारे।

काम क्रोधा मद लोभ मोह से, सभी विकारों से मैं पीड़ित।

अन्धाकार में मैं हूँ डूबा, मुझे बचा लो मैं हूँ चिंतित।

जीवन तुझ यादों में बीते, शुभ कर्मों पर सदा चलूं मैं।

*ज्ञान दीप ईश्वर दर्शाना, करुँ विनय तुमसे ईश्वर मैं।*23

हे ईश्वर तुम जग के पालक, हम सब प्रभु जी तेरे बालक।

दया दृष्टि तुम अपनी रखना, सुन्दर जीवन के तुम सर्जक।

तेरी ओर निहारें हम सब, तुझसे ही पाते हैं हम बल।

अन्धाकार में दीप जलाना, नयनों से गिरता है प्रभु जल।

हरपल ईश्वर तुझे मनायें, तेरी यादें नहीं भुलायें।

मेरे जीवन के तुम स्वामी, नैया मेरी पार लगाये।

शुभ कर्मों को गले लगावें, ज्ञान दीप को सदा जलावे।

तम से प्रभु भ्रमित न होवें, हरपल तेरे ही गुण गावे।

;षी-मुनी सब धयान लगाते, याद तुझे कर वह सुख पाते।

भटक न जायें प्रभु डर लगता, नयना मेरे नीर बहाते।

द्वार खड़े हम ईश्वर तेरे, नहीं हमें तुम ठुकरा देना।

चाह हमारी हमें प्यार दो, इन नयनों को तुम लख लेना।

24

हरि तुम बिछुड़े कुछ न सुहावे, नयना झर-झर नीर गिरावे।

सुधि हमरी लो नाथ अबल हम, तुम बिन जियरा भर-भर आवे।

जतन करुँ मैं कैसे पाऊँ, इन नैनन की प्यास बुझाऊँ।

मेरी लाज रखो करुणाकर, शरण तुम्हारी प्रभु जी आऊँ।

रो-रो अंखियां भई बाबरी, मुझसे रुठे क्यों सांवरिया।

नीरस तुम बिन जीवन सारा, तुम आओ तो छलके खुशियां।

आस टिकी है तुझी एक पर, हमको कैसे मिले सहारा।

ज्योतिपुंज तुम ज्योति जला दो, जीवन में मैं तो हूँ हारा।

चलूं समझ यहाँ समझ बौनी, देख न पाऊँ तेरी होनी।

कर्मपाश में बंधाकर चलता, मुक्ति हुई ना दुर्लभ योनी।

सारे जग के तुम रखवाले, मेरे रखवाले भी बनना।

*मैं हूँ निपट महाअज्ञानी, सद्कर्मों से विमुख न करना।*25

धयान ईश का सदा करो मन, सद्कर्मों में सदा चलो मन।

जग की कीचड़ में रहना है, नभ से तू ना धयान हटा मन।

अब यह किसका कल किसका था, परसों किसका होगा यह मन।

दर्द हिया में लेकर बैठा, कब अपना होगा सोचे मन।

दो पल का जीवन जाता है, इन्तजार में थक जाता है।

चाहत कभी न पूरी होती, काल बांह में कस लेता है।

बड़े-बड़े रजबाड़े देखे, ताले लगे किलो में देखे।

रोने ना कोई भी आया, ऐसे राजा मरते देखे।

करो अर्चना मन उस प्रभु की, जिसकी मर्जी से हम आये।

ज्ञान दीप को वही जलाये, झर-झर नयना आंसू आये।

तिनका-तिनका जोड़ जान ले, नहीं यहाँ पर कुछ भी अपना।

कुछ पल का है खेल यहाँ पर, मिट जायेगा सारा सपना।

26

द्वार खड़े हम तुझे पुकारे, मेरे जीवन के रखवाले।

निशदिन तेरे ही गुन गायें, निर्बल को बल देने वाले।

यह अनजान डगर लम्बी है, हमरी तुमसे यह विनती है।

दिल से दूर कभी ना करना, याद करें अंखियां रोती है।

जन्मों से मैं भटक रहा हूं, पार तेरा पा सकते न हम।

हिय में मेरे दीप जलाना, भूल सकें ना कितना हो गम।

बहते आंसू करें अर्चना, और नहीं कुछ मेरे सजना।

तुझ चरणों में छिपा हुआ सुख, ना इससे तुम वंचित करना।

घट-घट बसे तुझे पर ढूंढे, जीवन का कुछ राज न जाने।

कर्मों के बन्धान में बंधाते, क्या हो आगे हम ना जाने।

शरणागत हूँ ठुकराना मत, अज्ञानी हूँ समझ यह लेना।

*तुम रुठो तो जाये कहाँ हम, पीड़ा मेरी तुम लख लेना।*27

रिमझिम-रिमझिम नयना बरसें, तुमसे मिलने जीया तरसे।

तुझ वन्शी की धुन सुनने को, तड़फ रहा दिल क्यों ना बरसे।

सदियां बीत गई न आये, प्यासा हूँ ना प्यास बुझाये।

प्यास बढ़े प्रभु निशदिन तेरी, इसी प्यास में हम मिट जाये।

लहरें हम सागर तेरी हैं, भूल तुझे क्यों अलग हुई हैं।

निज को भूल बहें तुझमें ही, तुमसे मेरी विनय यही हैं।

अन्तस में तू लहराता है, जीया बाहर क्यों जाता है।

क्या चाहत ले जगत चल रहा, नहीं समझ कुछ भी आता है।

दर्द छिपा अंखियों में झांके, थक-थक कर यह प्राण पुकारे।

रुठ नहीं निर्मोही हमसे, ना चल पाये बिना सहारे।

आन पड़ा थक कर दर तेरे, रोती अंखियां तुझे न भूले।

मेरे सुन्दर श्याम सलौने, शरण तुम्हारी मुझको रख ले।

28

ईश्वर मुझे बना ले अपना, द्वार पड़े बस हम तेरे हैं।

कभी नहीं हम बिछुड़े तुमसे, माना हम तो अज्ञानी हैं।

सदा उलझते चाहत में हैं, तुम बिन अंखिया यह रोती हैं।

कैसे तुझे रिझाऊँ ईश्वर, तुझे तरसते मिलने को हैं।

अंधियारी रातें हैं ईश्वर, आस सुबह की हमें लगी है।

नहीं डूब जाये यह नैया, एक सहारा बस तू ही है।

कैसे हम दिल को दिखलायें, पल-पल में हम नीर बहायें।

तुम बिन मेरी कौन सुनेगा, बीत रहे पल जी घबराये।

भजे तुझे यह बीते जीवन, कट जायें दुख के सारे पल।

जीया रोये सुधिा ले लेना, और नहीं है कोई सम्बल।

ज्ञान धयान का लिये भुलावा, भटक न जायें ईश कहीं हम।

*आंसू से पग धाो लेने दो, फिर ना होगा कोई भी गम।*29

कुछ गीत सुना प्रभु मैं पाऊँ, आंखों से अश्रु चढ़ाऊँ मैं।

जग में आया तुमको भूला, कैसे यह दन्श मिटाऊँ मैं ?

फिरै देवता हम तो रोते, जग की ठोकर को हम खाते।

मेरा हिय बैचेन हुआ है, हमें सतावे दुख की रातें।

तुम बिन मेरा जीवन सूना, बिछुड़े सब ना मिला सलौना।

नयनों की ज्योति जले जब, चाहूँ तुम बिन मैं जागूं ना।

दया हमें मिल जाये स्वामी, आये जीवन में हरियाली।

कोयल कूके मेघा बरसे, उठे गीत मैं रहूँ न खाली।

हरपल यह तन मिटता जाये, खोजें तुझे नहीं पर पायें।

प्रीति न तोड़ों प्रियतम मुझसे, रो-रो कर बस यही सुनायें।

अज्ञानी हूँ गुन न मुझमें, करुँ प्रार्थना हाथ थाम लो।

टिकी द्वार पर आंखे मेरी, रोती अँखियों को प्रभु लख लो।

30

राम-राम कह चलते जायें, मृगमरीचिका में न खोयें।

पूर्ण जरुरत यहाँ न होती, अन्तस में हम दीप जलायें।

आंखे खोली जग में आया, रो कर हमने शोर मचाया।

हम ना जाने उस माता को, जिसने अपना दूधा पिलाया।

हम बस केवल रोना जाने, दूधा पिलाये माँ पहचाने।

जग में हम बस रोना जाने, कैसे राखे वह ही जाने।

भर-भर अंखियां नीर गिराये, चाहें प्यार तुम्हारा पायें।

तुम बिन नहीं सहारा कोई, अनजाने पथ में भरमाये।

रोते हैं हम रोना जाने, ज्ञान धयान कुछ भी ना जाने।

प्रीति न तोड़ो प्रियतम मेरे, कर अनाथ ना जग दे ताने।

तेरा प्यार मिले तर जायें, जग के दुख ना हमें सताये।

*सकल सृष्टि का तू है स्वामी, निशदिन तेरे हम गुण गाये।*31

तू क्यों रुठा है दर्द छिपा, स्वीकार करो मेरी पूजा।

ले आंसू जग में घूम रहा, खाली झोली है ना दूजा।

कैसे हम तुझे रिझायें प्रभु, वह वस्तु कहाँ से लाये हम।

यह डूब रही मेरी नौका, प्रभु पार करें कैसे अब हम।

तेरा ही एक सहारा है, ना बोले कौन हमारा है।

रो-रो कर आंखे लाल हुई, क्यों सर्जक हमको भूला है ?

पथ तेरा हरपल हम देखे, कुछ चाह नहीं तुझ बिन देखे।

कैसे मैं पुण्य सजाऊँ प्रभु, नहिं अंधाकार में कुछ दीखे।

मैं द्वार तुम्हारे पड़ा हुआ, करुणा की भीख हमें दे दे।

अज्ञान तिमिर से घिरा हुआ, इस हिय में दीप जला तू दे।

उठती गिरती यह लहर ईश, हमको विचलित न कर पाये।

तुझमें हरदम हम डूब रहे, तू जाम पिला सुधि ना आये।

32

तुम बिन चैन हरि नहीं आये, जग की बतियां नहीं सुहाये।

पल दो पल के जीवन में भी, ?ंस दलदल में शोर मचाये।

जग के स्वामी पालनकर्ता, सर्जक मेरे तू ही तारे।

हूँ अज्ञानी बालक तेरा, ईश तुम ही मेरे सहारे।

तुमको ढूंढू आंसू लाऊँ, देख विवशता मैं घबराऊँ।

चलता चाहत को ले तेरी, पथ में जाने कब गिर जाऊँ ?

तुमको रहे सदा हम जपते, टूटे न हम कठिन हैं रस्ते।

रहे चढ़ाते नीर नयन के, दे वर ईश यही हम कहते।

बने लहर बहते ही जाये, ना अपना संघर्ष जतायें।

तेरी मर्जी से हम आये, रजा रहे हम हँसते जाये।

बार-बार हम नमन करें प्रभु, रुठ न जाना मेरे हमदम।

*भरी नीर से अंखियां मेरी, प्राण पुकारे तुमको हरदम।*33

हरि तुम आओ प्यार बढ़ाओ, हिय में तुम मेरे बस जाओ।

भटक रहा जन्मों-जन्मों से, अपनी करुणा को दर्शाओ।

तुझे याद कर हरषे जीया, बिना तुम्हारे रोये अंखियां।

कितनी देर करोगे प्यारे, टूट रही जीवन की कड़ियां।

मैं मतिमन्द और अज्ञानी, बिगड़ी जाती यहाँ कहानी।

प्रभु तुम्हारे चरण पड़ा मैं, आता अंखियों से है पानी।

भवसागर में डोल रहा हूं, तुझ छवि पाने तरस रहा हूँ।

छिपे कहाँ मेरे मनमोहन, बन जा खेवट हार गया हूँ।

तुझ याद में खो गई राधाा, नाची थी मतवाली मीरा।

जिसने तेरा जाम पी लिया, टूट गया सब दुख का घेरा।

विरह अग्नि में जलूं रात दिन, तुमसे मिलने का है सपना।

द्वार तुम्हारे पड़ा हुआ हूँ, प्यासा दिल यह बरसे नयना।

घट-घट में तुम बसते स्वामी, फिर भी अंखियां नीर बहायें।

जान न पाये अन्तर्यामी, कस्तूरीमृग सम भरमाये।

जानूं कैसे मैं अज्ञानी, दाता तू भर झोली खाली।

इतने तूने रंग बिखेरे, रहा न जाये तुम बिन माली।

जिवड़ा रोये तुमको पाये, सब जीवन की प्यास मिटाये।

शरण तुम्हारी प्रभु मैं आया, भटके हिय को चैन न आये।

दया करो यह नयन निहारें, फूल खिले ना बिना तुम्हारे।

तम को काटो मेरे मोहन, हरपल तुमको प्राण पुकारें।

कर्म श्रृंखला खत्म न होती, बुझती जाती जीवन ज्योती।

कैसे पार करुँगा नदिया, देखे अंखियां साहस खोती।

तुम्हीं उबारों तो मैं उबरुँ, कृपा तुम्हारी से यह सुख लूँ।

*इस दुख के दरिया में बहते, चाहूँ तेरा हाथ थाम लूँ।*35

पता न ईश्वर कहाँ छिपे तुम, दुख तुम बिन न कोई हर सके।

अंधियारे पथ पर मैं घूमूं, नीर नयन से नहीं रुक सके।

किस चाहत को लेकर आये, भटक-भटक जिय जग में जाये।

आंसू की बरसात है होती, तृप्त नहीं धारती हो पाये।

चले जा रहे कहाँ जा रहे, जाने ना गन्तव्य हमारा।

नहीं क्षुधा पूरी हो पाती, बिता दिया यह जीवन सारा।

हे दुख भंजक तुम प्रणाम लो, सारे दुख को ईश्वर हर लो।

प्रभु दो पल के इस जीवन में, मुस्काहट को तुम ना हर लो।

सदा सुमरते रहे ईश हम, ऐसी हिय में ज्योति जला दो।

तिमिर हटे होवे प्रकाश प्रभु, शरणागत की रक्षा कर दो।

नीर बहे यह अर्धा चढ़ाये, पास नहीं कुछ हम शर्मायें।

रिझा सकूं मैं प्रियतम तुमको, मिले कृपा तो कुंजी पायें।

36

आ जाओ मेरे सांवरिया, तुम बिन जाये मेरा जीया।

हरपल अँखियां बाट निहारे, आ जाओ यह महके बगिया।

जीवन के सब रंग तुम्ही हो, मेरे तो आनन्द तुम्ही हो।

तुम बिन जियरा भर-भर आवे, बोलो मोहन कहाँ छिपे हो ?

जग की बतियां नहीं सुहावें, अंखियां रोवे नीर बहावे।

कैसै अपना हिया दिखाऊँ, प्राण पुकारे देर लगावे।

गुनि-मुनि विधि से धयान लगाते, केवल हम तो नीर बहाते।

निर्मोही देखो तो हमको, कुछ पल बाकी यह भी जाते।

वन्शी की धुन हमें सुना दो, रोती अंखियां प्यार दिखा दो।

मगन होंय इस धुन को सुनकर, मेरे मोहन पार लगा दो।

चरण पड़ा हूँ भूल न हमको, मेरे जीवन के सर्जक हो।

*तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, मात-पिता गुरु बन्धु सखा हो।*37

गीत गूंजते फिर खो जाते, पता नहीं तेरा यह पाते।

देख रही है रोती अंखियां, बीत गये युग तुम ना आते।

सुन्दर सुपने सजा-सजा कर, पास तुम्हारे से हम आते।

चूर-चूर जब होते जग में, उठता धूंआ फिर हम रोते।

खिलता फूल करे प्रार्थना, कर स्वीकार मेरी अर्चना।

कांटों से तुम मुझे बचाना, मारग मेरा यह अनजाना।

तुम्हें जपते ईश्वर हम तो, कभी हमें मिल जाओगे।

जिया जले जो विरह अग्नि में, मैं चाहूँ भस्म लगाओगे।

जग के सब सुख है क्षणभंगुर, साथ तुम्हारा हो क्या फिर दुख।

तुम अविनाशी शक्तिमान हो, बिना कृपा न मिलता यह सुख।

दो दिन का मेला है छलिया, भूल हमें ना जाना रसिया।

थक हारे हम पड़े द्वार पर, पार लगा दे मेरी नैया।

38

हे हरि कृपा करना हम पर, तुम्हारी शरण आते है।

याद करें हम हरदम तुमको, नयनों में आंसू आते है।

पाने को प्यार भटकते हैं, तुम साथ रहो यह कहते हैं।

जग के अनजाने रस्ते पर, सम्बल तुमसे ही पाते हैं।

सकल सृष्टि के तुम स्वामी हो, अविनाशी दुख के भंजक हो।

जपे तुझे जो सुख देते हो, पीड़ा को उसकी हरते हो।

कितने स्वप्न संजोये मैंने, चैन मिला ना तुमको भूले।

तुम बस जाओ मेरे हिय में, पड़ जायें सावन के झूले।

;षि-मुनि करते है धयान तेरा, दिन रात पीते जाम तेरा।

वह जाम पियूं सुधि बुधि खोऊँ, इतना करो अहसान मेरा।

जग के मालिक जग की जानो, तुझे हिय बसाये कर्म करें।

*रो-रो कर तुझसे यह मांगे, अन्तिम क्षण तेरे चरण गिरे।*39

हरि जप मनुआ एक सहारा, इस जीवन को देने वाला।

जो कुछ चाहे मांग उसी से, सब कुछ वह ही करने वाला।

जग के झंझावत में वह ही, हरपल वह ही हमें बचाये।

देख न पाऊँ कहीं छिपा है, आंखों में बस आंसू आये।

तेरी यादें लागें मीठी, क्यों मन भटक-भटक यह जाये ?

आंख मिचौनी खेल न प्रभु जी, चाह यही बस तुमको पायें।

मेरे खेवट मुझे संभालो, इस नौका को तुम्ही उबारो।

डूब रही है मेरी नैया, रोती अँखियां मुझे निहारो।

तेरे साये में ही जी कर, बीते पल बस चाह यही है।
जग में ठोकर पर ठोकर खा, हार गया ना राह कहीं है।

बहता इन अंखियों से पानी, तुझ कृपा मिल जाये स्वामी।

नहीं विसारो मुझे अबल मैं, दास तुम्हारा मैं हूँ स्वामी।

40

लागे ना जियरा यह डोले, चाह यही बस तुमको पाये।

मेरे देवता तुम ना रुठो, नहीं ठिकाना तुम बिन पाये।

गीतों को हम तुझे सुनायें, इस जग में मन को बहलायें।

साथ संग सब छूटा जाये, अँखियां पल-पल नीर बहाये।

दास बना लो मुझको अपना, सकल सृष्टि का तू है स्वामी।

आता आंखों में है पानी, मफ मुझे कर अन्तर्यामी।

यहाँ छूटता सब कुछ जाये, पकड़ न आये शोर मचाये।

नाशवान सब कुछ दुनिया में, अच्छा हरि से प्यार बढ़ाये।

यहाँ विवशता में हम ःसंकर, बस कोल्हू के बैल हुए है।

फिर भी जप ले हिय में उसको, जाते पल कुछ शेष रहें है।

रोये उस बिन हाय भटकते, चलती है उसकी ही मर्जी।

*बहते नीर करें हम विनती, आना जाना उसकी मर्जी।*41

अश्रु ढुलकते रहे नयन से, इस जीवन में कोई आये।

पोंछे बहते आंसू मेरे, सदियां बीत गई ना आये।

मीठी बातें किसे सुनाये, तुम बिन किससे प्यार जतायें।

हरपल तेरी करें प्रतीक्षा, जीया मेरा भर भर आये।

इन नयनों की ज्योति तुम्हीं हो, इस जीवन के प्राण तुम्ही हो।

जैसे जल बिन मछली तड़पे, हम भी तड़पे छिपे कहाँ हो ?

जोर नहीं यह माना हम में, काहे हमें विसारा तुमने।

तेरी आहट को सुनने को, निशदिन अखियां देखे सुपने।

मेरे खेवट पार लगाओ, डूब रहे ना नजर चुराओ।

अज्ञान तिमिर में ग्रसा हुआ, अपनी करूणा को दर्शाओ।

सुमरण तेरा सदा करें हम, हरपल तेरा धयान धारें हम।

बहती जाती जीवन नौका, तुमसे दूर कभी ना हो हम।

42

चाहा बहुत तुमको यहाँ, होनी उड़ा ले चली।

ना मानता कोई यहाँ, हाय दुनिया से छली।

दर्द को कैसे उठाऊँ, जी रहे हम क्यों यहाँ?

तेरी मुस्काहट पाने, जन्म सौ लेंगे यहाँ।

देखते ही देखते सब, हो रहे ओझल यहाँ।

कौन किसका है जगत में, तन भी अपना ना यहाँ।

पार वह ही लगायेगा, मन सुमर हरि को सदा।

कब कौन कहाँ जायेगा, हो रहे पत्ते जुदा।

नयन में आंसू हमारे, कर नहीं कुछ पा रहे।

देखते ही देखते सब, दूर हमसे हो रहे।

पीड़ हिय में है सुलगती, मीन जल बिन तड़पती।

*ईश की बिन किरपा हाय, आंख हरदम बरसती।*43

प्रीति लगा ना जग मेले से, रूल कर जीवन सुमरण से।

नदी नाव संजोग यहाँ पर, विछुड-विछुड़ जाते अपनों से।

रोवें अंखियां वह नहिं आये, मन को धीरज कौन बंधाये।

इन्तजार की जाती घड़ियाँ, चलो यहाँ फिर सब मिट जाये।

कितने स्वप्न संजोये हमने, साथ चलेंगे हरदम तेरे।

मुझे छोड़ तू बीच भंवर में ,चला गया अरमान बिखेरे।

थका यहाँ मैं खोज सहारा, मिला हमें न कोई किनारा।

ईश कृपा अपनी दिखला दो, टूट गया दिल मैं हूँ हारा।

दिल भी मेरा यहाँ गया बुझ, करे नहीं कुछ रोवे अंखिया।

ले लो ईश्वर तुम मेरी सुधा, पार करो हे जगत खिवैया।

करूँ प्रतीक्षा बैठ द्वार पर, अंखिया नीर गिराये झरझर।

तेरी यादों में ही खोकर, तुझे पुकारूँ मेरे हरि हर।

प्रीति न तोड़ो पांव पड़ू मैं, मुझको हे हरि ना बिसराओ।

नैनन में मेरे बस जाओ, सांसों में मेरे रम जाओ।

यह दिल तुझी में हरि लगावे, सारे दुख मेरे कट जावे।

तुझे पुकारूँ जग आंगन से, अंखियाँ मेरी नीर बहावे।

भजते रहते तुमको निशदिन, ना अनाथ कर ईश्वर हमको।

तुम बिन मेरी दुनिया सूनी, नीर गिरे बस चाहें तुमको।

तेरी करूणा को प्रभु पाया, फिर भी जग में मैं भरमाया।

रोऊँ हरपल मेरे मोहन, छिपो न तुम मैं चाहूँ साया।

भटक रहा मैं जियरा रोये, तेरा जीवन मेरा कुछ ना।

बिखराये तू रंग अनेंको, कसक कलेजे की जाये ना।

तू सुन पुकार सुन ले पुकार, नयनों में है आंसू का हार।

इस जीवन का तू ही श्रृंगार, झोली को लेकर खड़ा द्वार।

हरि बिना हम कहाँ को जावें, ठौर नहीं कोई भी पावें।

मेरे भगवन हमें देख लो, अंखियां झर झर नीर गिरावें।

बस जाओं तुम खो जायें हम, मिट जाये सारे फिर यह गम।

आंसू मेरे कहते तुमको, हम हैं अबल ईश तुम सक्षम।

उर संशित पग डगमग होते, कैसे पार करेंगे रस्ते।

तुम्हीं बतादो मेरे मोहन, विरह अग्नि में हरपल जलते।

पड़ जायें सावन के झूलें, तेरा प्यार मिले मन झूमें।

लहर लहर लहराये भू पै, आनंद बरसे मेरे हिय में।

सुपनों में मैं तुझे सजाऊँ, नये नये नित गीत बनाऊँ।

तुझसे ही मैं संबल लेकर, इस जग में मैं चलता जाऊँ।

रात अंधोरी आस सुबह की, बीत रहे पल चाह मिलन की।

आसूं बहते कहते तुमसे, रूठ न जाना बात हिय की।

हरि नहिं छोड़ो चरण पड़ू मैं, दास तुम्हारा जन्मों का मैं।

तुम बिन नयना भये बाबरे, हरपल नीर बहाऊँ हरि मैं।

पलपल बीत रही हैं घड़ियां, कैसे पाऊँ तोहिं सांवरिया।

क्यों मुझसे तुम रूठ गये हो, भटक रहा ना चैन सांवरिया।

नयनों के मोती लुटते है, भूल गया पथ मुझे दिखा दे।

खूब लुटे पर अब तो लख ले, वन्शी की धुन मुझे सुना दे।

विरहअग्नि जल जाये जीया, रूठ न जाना मेरे पीया।

तेरी यादों में बस जीते, नहीं और कुछ मेरे हीया।

तेरी यादों को ही लेकर, बीते मेरे दिन जीवन के।

भूलूं कभी न जलूं भस्म हो, घर पाऊँ अपने साजन के।

प्यास जगा दे मुझे मिटा दे, खाली झोली तू यह वर दे।

*बस जाओ तुम इन नयनों में, तेरी मही कृपा सबको दे।*47

ईश तुमसे प्रीति तोड़, मैं कहाँ पर जाऊँ?

खिला तेरी बगिया में, पथ मिले हर्षाऊँ।

सूना सूना लगे सब, कित छिपे मेरे रब ?

आसूं यह मेरे बहे, तुमको पुकारें रब।

आंखों में नींद नाहिं, दिल में चैन नाहिं।

बीतें न ऐसे यह दिन, सुन तू जगत माही।

चलूं मैं संभल संभल कर, संभल पर ना पाऊँ।

बहते रहें यह आंसू, तुझे अर्धा चढ़ाऊँ।

नयन में सपने मेरे, मिलने की आस है।

तड़े यह जीय मेरा, मिलने की प्यास है।

मुरझा यहाँ हम जायें, फिर भी न होगा गम।

झलक यहाँ देख लेते, मिट जाते रहो तुम।

48

शरण मुझे हे हरि तुम रख लो, चहुँ दिश कोई नाहिं बूझे।

मुझ अनाथ को संरक्षण दो, रस्ता मोहि कोई न सूझे।

सुधि मेरी ले लो करुणाकर, तुझ किरपा बिन खाऊँ ठोकर।

डर लागे जिय कांपे थर-थर, अंखियां नीर गिरायें झर-झर।

रोती अंखियां तुझे पुकारे, मत हमको तू प्रभु बिसरावे।

चरण पडू मैं दास तुम्हारा, अज्ञानी को तुही बचावे।

जग में आया चाहत लाया, टूटी देख-देख कर रोया।

अन्धाकार से घिरा हुआ मैं, ढूंढ रहा प्रभु तेरा साया।

मुझे संभालो सर्जक मेरे, गिरे जा रहे तुमको टेरे।

कैसे तुझे रिझाऊँ रसिया, कट जायें यह दुख के घेरे।

घना अंधोरा ज्योति जला दो, जीवन में उल्लास जगा दो।

कट जायें यह जीवन के पल, शान्त चित्त सद्बुि) जगा दो।

49

खोजा तुमको हरि पा न सके, हम मिटा सके न कर्म कलुष।

नहीं जख्म अपने दिखा सके, जीवन के तुम थे इन्द्रधानुष।

हे ज्योतिपुंज करुणा सागर, हम ईश्वर द्वार पड़े तेरे।

देखो नयना बहते झर-झर, प्रभु अन्धाकार, तुमको टेरे।

दो बूंद अमी की हमें पिला, मिट जायें जग के सभी गिला।

मेरे हिय में तुम बस जाओ, प्यासा हूँ जल को तुही पिला।

सारे जग के तुम स्वामी हो, मैं भटक रहा तुम छिपे कहाँ।

सारा लगता सुनसान जहाँ, ईश्वर बता दो जाये कहाँ ?

जन्म-मृत्यु सुख दुख इस जग में, ना रुला हमें तू पल-पल में।

मेरे सर्जक मेरे हमदम, हमको संभाल लो इस पथ में।

नहीं बनो निर्मोही प्रभु तुम, यह नैया देखो डूब रही।

प्रभु नयन निहारें तुमको ही, झड़ियाँ आंसू की बुला रही।

50

हरि तुम बिन न कोई सहारा, फिरता जग में मारा-मारा।

कृपा तेरी होवे स्वामी, दुःख मिटे जीवन का सारा।

अन्तर्यामी सृष्टि रचैया, पार लगा दो मेरी नैया।

बीच भंवर में डूब रही है, लो सुधि को मेरे कन्हैया।

सुमरण तेरा सदा करे हम, फिर भी टूट रहे है ना भ्रम।

कर्मपाश में बंधो हुए हम, तेरी ओर निहार रहे हम।

अगम अगोचर मुक्तिदाता, कैसे पाऊँ भाग्य विधाता।

खाली झोली ले फिरता हूँ, नयना मेरे आंसू आता।

तू ही मेरा पालनहारा, तुम बिन मुझसे रहा न जाये।

नहीं करो प्रभु मुझसे किनारा, याद तुझे कर नयना रोये।

हे जगदीश कृपा दर्शा दो, विलग न तुझसे हम हो पाये।

सूखी झील लबालब भर दो, झूमे नाचें तुझ गुन गाये।ही महिमा गाऊँ, मैं प्रीति लगाऊँ बस तुझमें।

कटे क्रूर इस जीवन का यह, बस जाओ हरि मेरे घट में।

हम कर-कर याद तुझे रोये, हम भटक रहे तुम कित खोये ?

बैचेन हुए जग में घूमें, हरि बता तुझे कैसे पाये ?

मतिमन्द यहाँ अज्ञानी हम, प्यासा दिल यह आँखियां है नम।

हम द्वार पड़े हे हरि तेरे, रुठो ना मुझसे ना है दम।

तू सकल सृष्टि का मालिक है, सन्तान तुम्हारी पालक है।

यह नयना तुमको ढूंढ रहे, तुम बिन यह जीवन खाली है।

हम हार गये तुम ना आये, जीवन सारा बीता जाये।

हम मृगमरीचिका में भटके, हरि कृपा करो तुमको पायें।

पूजा की थाली दीप नहीं, रोये आंखियां है ज्ञान नहीं।

हे हरि संभाल लेना तुम ही, कुछ पल बाकी हैं विनय यहीं।

हे हरि तुम हो नाथ हमारे, हम सेवक हैं दास तुम्हारे।

ढूंढ रही हैं तुमको आंखियां, तुम हो जीवन प्राण हमारे।

सकल मही पर राज तुम्हारा, तू ही सबका पालन हारा।

तुमको सुमरण कर सुख पाऊँ, चाहूँ ईश्वर प्यार तुम्हारा।

रो कर तुमको नाथ पुकारे, इस जीवन को देने वाले।

ताप हरो प्रभु प्यार बढ़ा दो, मिट जायें सब हिय के छाले।

अज्ञानी हूँ भटक रहा हूँ, रोये नयना तरस रहा हूँ।

अन्धाकार में दीखे ना पथ, भीख दया की मांग रहा हूँ।

तुझ बन्शी की धुन सुनने को, जियरा मेरा कान लगाये।

कितनी सदियां बीत गई हैं, हुआ विवश मैं आंसू आये।

ईश मुझसे प्रीति को जोड़ों, कुछ न सुहाये मुख ना मोड़ो।

*डूबेंगे हम भवसागर में, मुझे अकेला तुम ना छोड़ों।*53

राम-राम पूंजू मैं निशदिन, होवे तभी सफल यह जीवन।

अश्रु गिरे यादें हिय हरपल, दीप तुम्ही हो मेरे भगवन।

तुम बिन जग रसहीन हुआ है, क्या शिकवा जो रूका हुआ है।

हम अबोधा बालक हैं तेरे, चलना भी दुस्सार हुआ है।

और न जाने रोना जाने, कैसे मिले तुझे दीवाने ?

कितने रंग बिखेरे जग में, उड़ा जाये जिय यह न मानें।

तुझ मन्दिर पर खड़ा भिखारी, लौटूं ना यह झोली खाली।

मेरे देवता तुम ना रुठो, इस जीवन की राते काली।

इस दिल में प्रभु तुझे बसाऊँ, तेरे ही गीतों को गाऊँ।

छल न करो छलिया मेरे, तड़-तड़ कर न मर जाऊँ।

इस जीवन की चाह तुम्ही हो, रोती अंखियां छिपे कहाँ हो।

भटक-भटक कर हार गया हूँ, क्षमा करो करुणा निधाान हो।

द्वारे तेरे चल कर आऊँ, नहीं तुझे मैं कभी भुलाऊँ।

जग की मृगमरीचिका में हंस, निशदिन मैं हूँ नीर बहाऊँ।

लिये प्रयोजन क्या हम आये, भटक-भटक यह जियरा जाये।

मेरे खेवट पार उतारो, नौका मेरी डूबी जाये।

ना देखे आंखों का पानी, बीती जाती यह जिन्दगानी।

एक सहारा ईश तुम्ही हो, ना अब खेलो आंख मिचौनी।

सर्जक बता कहाँ जाये हम, बिन तेरे हारा चलकर पथ।

दया हमें मिल जाये स्वामी, शूलों को देते कांटे पथ।

युगों-युगों से सदा पुजारी, आ जाओ तुम मेरे माली।

बगिया महके कोयल कूके, मंडराये शूलों पर आली।

सांस-सांस में बस जाओ तुम, भूलें हम दुनिया के सब गम।

*इस दो पल के जीवन को जी, करें विसर्जित तुझमें ही दम।*55

कितनी पीड़ा दर्द यहाँ पर, हंसते फिर पल में रोते है।

भूला तुझे है नहीं ठिकाना, रुठो ना यह कठिन डगर है।

जलता दिल तुम आन मिलो प्रभु, नहीं तुम्हारे बिन है खुशियां।

झर-झर नीर बहाते नयना, मेरे जीवन के तुम रसिया।

निशदिन तेरी बाट निहारुँ, जाता जीवन तुझे पुकारुँ।

मेरे सर्जक मुझे न भूलो, कैसे निज को पार उतारुँ ?

कर्मों के बन्धान में बंधाकर, चले यहाँ न कोई किनारा।

तेरे एक इशारे पर प्रभु, यह ब्रह्माण्ड नाचता सारा।

घूम रहे हम पथ मिल जाये, तेरी यादों में खो जायें।

प्यास लिये तुझसे मिलने की, ना इस जग में हम भरमाये।

स्वीकार करो झोली खाली, तुम ही हो प्रभु मेरे माली।

अन्धाकार है इस जीवन में, दो प्रकाश रातें है काली।

56

जीवन के तुम सुप्रभात हो, तुमको खोज रहा है जिवड़ा।

चैन कहीं ना जग में पाया, मिलो तुम्ही तो हर्षे जिवड़ा।

चला यहाँ चल-चल कर हारा, पार नहीं तेरा कुछ पाया।

रोते नयना तुमको देखें, शरणागत प्रभु तेरी आया।

;षी-मुनी सब धयान लगाते, मन वांछित ;ल तुझसे पाते।

तुझसे मांगू क्या कुछ रसिया, रुका कंठ आंसू है आते।

चाह निहारुँ सदा तुझे ही, नहीं और कुछ मुझको भाये।

मेरे जीवन के तुम सर्जक, मर्जी तेरी मोहि नचाये।

पीड़ा का अम्बार लगा है, कांटों से पथ पटा पड़ा है।

चलूं सहारा तेरा लेकर, आंखों में तू बसा हुआ है।

आंख मिचौनी करते-करते, बीत रहा यह जीवन सारा।

*अपने मंदिर पर आने दो, तुझे नमन है मैं हूँ हारा।*57

हे हरि हर मैं हार गया हूँ, रोये नयना तड़ रहा हूँ।

मेरे पथ के दीप कहाँ हो, अन्धाकार में भटक रहा हूँ।

धुन सुनने को जियरा तड़े, पल-पल में आंसू छलकें।

छिपे कहाँ मेरे मनमोहन, डर लागे यह छतियां धाड़के।

कर अनाथ ना दास बना ले, इस जग से तू पार लगा दे।

इच्छाओं के भंवर जाल से, मोहि मुक्त कर चरण जगह दे।

तुझको बता रिझाये कैसे, हम है अबल-सबल तुम स्वामी।

बहे आंख में पल-पल पानी, द्वार पड़े हम अन्तर्यामी।

मेरे खेवट पार लगा दो, रुठो ना तुम दया दिखा दो।

करुणा के सागर हो प्रभु तुम, इन नयनों को तुम हर्षा दो।

लहर उठे उठ कर गिर जाये, कुछ ना हाथ जिया जल जाये।

ज्ञानदीप तू जला हृदय में, रजा तुम्हारी जिय को भाये।

58

जीवन नदिया बही जा रही, सोंचे विलग न होऊँ।

तुझे बसाये अपने हिय में, सागर में खो जाऊँ।

इन नयनों से बहता पानी, तुमको अर्धा चढ़ाऊँ।

तेरा जीवन ईश न भूलूं, हरि तेरे गुन गाऊँ।

मुझे न भूलो वसो हिया में, तुझ यादों में खोऊँ।

बीते जो जीवन की घड़ियां, तेरे ही गुन गाऊँ।

धुन तेरी सुनने को प्रियतम, कब से आस लगाये।

कितने बीत गये सावन है, फिर भी तुम ना आये।

कैसे समझाऊँ मन मेरा, हुआ विवश यह बौरा।

अंधियारा डर मोहि लागे, दीप जला दो मेरा।

मेरे ईश्वर शक्तिमान तुम, पूजे जर्रा-जर्रा।

*ले चल दुख के पार मुझे तू, होवे नया सबेरा।*59

ले चल मुझे तू नदिया पार, डूबे न नौका कर तू पार।

तुझे कहूँ मैं किसे पुकारुँ, नहीं सुनता जीवन बेकार।

जख्मी दिल है रोय पुकारे, तुम ही हो मेरे रखवाले।

आंखों में आंसू है तैरे, जायें कहाँ तुम बिन मतबाले।

सांस-सांस में रमे तुम्ही हो, मनुआ तुमको खोज रहा है।

रुठो ना तुम प्रियतम मेरे, दिल तुझमें ही लगा हुआ है।

चक्रव्यूह में फंसे हुए हम, भूल न जाये ईश्वर तुमको।

डर हमको लगता है प्रभु जी, नहिं विसराना ईश्वर हमको।

करुणा सागर तुझे निहारें, एक इशारे से तर जाये।

अबल ईश हम हार गये है, दया करो शरणागत आये।

सदा तेरे गीतों को गायें, भूल स्वयं को लय हो जाये।

आंसू को स्वीकार करो प्रभु, और नहीं कुछ जो दे पायें।

60

कह न पाता हिय कसक को, शब्द में मैं ढालता।

हम कर रहे स्तुति तुम्हारी, नहिं डगर को जानता।

अश्रु को स्वीकार कर लो, ईश अपना प्यार दो।

ना करो हमको अभागा, तुझ चरण की धूल दो।

हम भटकते खोजते हैं, अरमान यह तड़पते।

तुम न हमसे रुठ जाओ, तुझे प्राण पुकारते।

चाहतों में मैं ऐसा हूँ, कर रही पीछा सदा।

बिन कृपा खुशियां नहीं है, रो रहे हम तो सदा।

इस कलेजे की कसक को, देख ले अब तो तुही।

आंख को तुम मूंद लोगे, अश्रु खोयेंगे युहीं।

अप्प दीपो भवः सच है, मेरा दीप तू जला।

*डूबती नौका हमारी, पार कर इसको चला।*61

पथ पर तेरे सदा चलूँ प्रभु, जगत प्रलोभन नहीं लुभायें।

रहूँ सदा चौखठ पर बैठा, बीत उमर सारी यह जाये।

हमें पता ना हमरी मंजिल, नयन गिराते पानी झर-झर।

खो तुमको हम भटक रहे हैं, कृपा दृष्टि कब होगी ईश्वर।

कैसे तुझे पुकारे प्रभु जी, हम तो निपट मूढ़ अज्ञानी।

चल-चल उलझ यहाँ हम जाते, जीवन की राहें अनजानी।

अगम अगोचर पार न तेरा, इन्तजार कब होय सबेरा।

गिर-गिर उठे सहारा तेरा, जान सके ना जीवन घेरा।

अन्धाी दौड़ यहाँ सब भागे, भरे पेट ना तृष्णा जावे।

आंख मिचौनी का यह खेला, सर्जक काहे हमें भुलावे।

कसक कलेजे में जिय रोवे, मेरे ईश कहाँ तू सोवे।

थके यहाँ हम नयना तरसे, वर दे तुझको कभी न खोंवे।

62

यह अश्रु गिरें जो धारती पर, तुझ चरणों में नहिं चढ़ा सका।

डगमग करती मेरी नौका, नहिं हमें किनारा दीख सका।

लगता ही नहीं यह दिल मेरा, जग से है हमको नहीं गिला।

इन अंधियारी रातों में प्रभु, तू दीप ज्ञान का ईश जला।

ताने बानों को बुनबुन कर, बीता जाता यह जीवन है।

मिल जाये गली तेरी हमें, आंखों में पानी आता है।

सब साथ यहाँ छूटे जाते, मेरा तुम साथ न खो देना।

मेरे सर्जक है नमन तुझे, आंसू बहते यह लख लेना।

गा-गा कर पीड़ा को कहता, हिय दशा दिखाऊँ मैं किसको ?

पीड़ा के बहते सागर में, बिन कृपा नहीं पायें तुमको।

तेरी बगिया में ूल खिले, खिल-खिल कर वह गिर जाते हैं।

*जो रहे समर्पित सदा तुझे, वह भाग्यवान कहलाते है।*63

गीत तेरे ही चुने हैं, गा गुजर जायें जहाँ में।

बहते रहें अश्रु मेरे, मिटे तेरी याद ही में।

हम अबल तुम सबल हो, स्वीकार कर लो प्रभु हमें।

मेरे गीतों में रुदन, प्रभु मफ कर दो तुम हमें।

अर्चना स्वीकार कर लो, रुक रहा ना नयन जल है।

इस तड़ में ही मिटे हम, पुष्प भी भीगे हुए है।

मतिमन्द बालक तुम्हारे, जानते हम कुछ नहीं है।

कंठ यह अवरु) मेरा, प्यार बस मेरा तुही है।

पथ हमें अपना बता दो, चलते जाये यहाँ मिटे।

हम कभी विचलित न होवें, चाहे जगत में कुछ घटे।

नमन को स्वीकार कर लो, यह हमें वरदान दे दो।

नयन में छवि हो तुम्हारी, सांस में निज नाम दे दो।

64

कण-कण में तुम ईश बसे हो, करें शिकायत फिर भी हम।

अज्ञानी हैं ज्ञान नहीं है, पीते हरपल रहते गम।

कैसे जले ज्ञान का दीया, करें अर्चना तेरी हम।

पार उतारों इस सागर से, डूब रहे हैं ईश्वर हम।

तुम में हम प्रभु धयान लगावें, जीया मेरा हर्षावे।

तेरी प्रीति डोर में बंधाकर, हमरे संकट कट जावे।

हाथ जोड़ कर द्वार खड़े हैं, संकट मोचन नाम तेरो।

पार लगा दो मेरी नैया, डूबे यह इसे उबारो।

तेरा नाम जपे सुख पायें, इस जग में जी बहलायें।

अगम अगोचर नाम तुम्हारा, पार नहीं ;षि मुनि पायें।

आंखों से दो मोती गिरते, कुछ मेरे पास नहीं है।

*हे ईश्वर स्वीकार करो तुम, तुझ करुणा सदा वही है।*65

हम तेरे बालक हैं प्रभु जी, दया बनाये रखना।

मिलता हमको नहीं किनारा, बहे नैन से झरना।

वसो नयन हम हारे प्रभु जी, नहिं तुम बिन कुछ रहना।

जनम-जनम की प्यास मिटे तब, सुने हमारे बयना।

करुँ अर्चना हाथ जोड़ कर, रोये मेरे नयना।

लगी विरह की आग हिया में, कभी न चाहे बुझना।

तेरी मुरली की धुन सुनने, राह निहारें अंखियां।

दुख के बादल सब फट जाये, कैसे जोडू कड़ियां।

मंजिल तू ही चाहत तू ही, तुम बिन जी न लगता।

बने भिखारी घूम रहे हैं, नहिं जिय तेरा दुखता।

तेरे नाम का ले सहारा, चलते जाये जग में।

पार लगा देना यह नौका, नहीं हमारे बस में।

नहीं सि) की मुझको चाहत, तुम चरणा मिट जाऊँ।

थामो अंगुली मेरी प्यारे, नयना नीर चढ़ाऊँ।

जीया डरपे बिजली कड़के, कित मैं ठौर बिठाऊँ ?

रो-रो अंखियां हार गई हैं, शरण तुम्हारी पाऊँ।

कुछ पल तुमको ईश निहारुँ, फिर चाहे मिट जाऊँ।

जनम-मरण का खेल अनोखा, नहीं समझ मैं पाऊँ।

प्यास तुम्हारी ईश्वर प्रिय है, सब श्रृंगार तू ही है।

बिछुड़े तुमसे रोये नयना, प्रभु समर्थ तू ही है।

द्वार पड़े हम ना ठुकराओ, ना ही लेख लगाओ।

नहीं समझ अज्ञानी बालक, क्षमा हमें कर जाओ।

चले गिरे सूझे पथ नाहीं, सुन हम दोषी नाहीं।

हुए विवश चलते जाते हैं, मिला ज्योति को माहीं।

गिरती उठती यहाँ वासना, जैसे पानी की लहरें।

जीवन नदिया बहती जाती, भूल ईश आंसू गेरे।

किस किसका प्रतिरोधा करेंगे, अपने हाथ यहाँ क्या है ?

बहता जा बस ईश समर्पित, समझ मेल दो दिन का है।

भूख-भूख सब ओर भूख है, सुरसा सी बनकर बैठी।

अनहोनी भी लिये जाल को, कदम-कदम पर छुप बैठी।

इस अँधियारे में वह ही बस, जो अपना दीप दिखाये।

हृदय वसा ले उसको जप ले, नौका को पार लगाये।

लिये जा रही नदिया हमको, कर्ता बन जिया दुखाये।

उसकी मर्जी से ही आना, मर्जी उसकी से जाये।

बसा उसे बस अपने जिय में, सब मुक्ति भरम मिट जाये।

सागर नाच रहा इस जग में, सब गीतों को वह गाये।

करें अर्चना हाथ जोड़े खड़े हैं, गिरते हैं आंसू लखें राह को है।

सुना दे मुरलिया जागे यह किस्मत, बसे हो दिल में तुम्हें चाहते हैं।

तुम्हारें हैं बालक हम तो प्रभु जी, दया अपनी रखना हारे यहां जी।

न मिलता हमको कोई भी किनारा, बसो मेरे नयन निहारे तुझे जी।

मंजिल तुही बस तुझे हम हैं चाहें, तुझी से ही राहत प्रभु मांगते है।

दुख के जो बादल फटे हैं यहाँ पर, रो-रो दया हम तेरी मांगते है।

नयन में आंसू धाड़कता यह दिल है, कहाँ छिप गया तू नचाता मही है।

सजाये यहाँ तूने रंग अनेकों, न तुझ रंग समझे विरह तो यही है।

सर्जक संहारक यहाँ खेलता है, डरता है जिवड़ा यहाँ डोलता है।

नाम तुम्हारा है हमको सहारा, लगा पार नैया पुकारें तुझे हैं।

गाता है मौसम फ़िजा नाचती है, नहीं देखें अंखियां गम से सनी है।

बन कर के खेवट लगा पार किस्ती, भंवर में प्रभु यह मेरी डूबती है।69

उस पार क्षितिज के पता न क्या, सूनी अंखियां देख रही है।

अनन्त कथायें यहाँ जन्मी, अपनी-अपनी सुना रही हैं।

सुख खो जाता दुख खो जाता, होता है वह कैसा प्रकाश ?

निर्धूम ज्योति जलती रहती, मिटती जाती फ़िर सभी आस।

लहरों का अपना क्या जग में, सागर ही खेल रहा सब में।

व्याकुल हो लहरें डोल रही, ना जान रही क्या है घट में।

सुपनों के जाल बुने हमने, आंसू से भी सींचा हमने।

हम ठगे रह गये उस पल जब, जग छोड़ा क्या पाया हमने।

होनी हरदम यहाँ नाचती, अनहोनी का सांग रचाये।

क्षण भर का जो मेल यहाँ पर, नहिं पता कौन कब खो जाये ?

चलता जा खेता जा नौका, नहिं पता यहाँ क्या हो जाये ?

नयनों में तू बसा जलधा को, तू लय इसमें ही हो जायें।

70

खेल तेरा नाच मेरा है, चले तमाशा देख रहा।

सुख दुख की चक्की में पिसकर, पागल मनुआ सोच रहा।

किस कोने में छिपे हुए हो, आंसू को ना लखते हो।

कैसे इस मन को समझायें, तुम ही मेरे सर्जक हो।

खिलने से पहले मुर्झाया, ऐसा हूँ फ़ूल यहाँ मैं।

तुमको खोजा खोज न पाया, भटक रहा मैं इस जग में।

अश्रु लुटायें इन आंखों ने, नहीं किसी ने भी देखा।

ऐसे भी हम क्या अपराधी, कौन ले रहा यह लेखा।

तेरे खेल निराले भगवन, अज्ञानी हैं बालक हम।

यहाँ जल रही बगिया मेरी, तुझे पुकार लगाते हम।

साथ हमारे तन्हाई है, रोते पर तुम ना आये।

खेल खिलाओ ऐसा भगवन, देख तुझे जिय हर्षाये।

71

जो भी है वह बस सुन्दर है, आंखों में बसा समुन्दर है।

कहने का कुछ अधिकार नहीं, दुख प्रगट करे वह सब कम है।

दुख-सुख हम सृजन यहाँ करते, अपनी चाहत में हम हंसते।

उदर भूख से भटक रहे है, साधान सुख के थोड़े पड़ते।

राम बिना न कोई सहारा, धान्य वही जो हरपल भजते।

जग की तपती पगडण्डी पर, सब कुछ भूल उसे ही लखते।

टूटा दिल कितने हैं शिकवे, कहें किसे पर रोवे सुपने।

जन्मों-जन्मों से भटक रहे, पा सके तुझे ना तुझे अपने।

खिल-खिल फूल यहाँ गिरते हैं, बिना खिले भी गिर जाते हैं।

तुम्हें बसाये हुये हिय में, धान्य वही बस कहलाते है।

सुख-दुख का दो पल का जीवन, ढलती फिरती सब माया है।

प्रीति लगाले जो बस तुमसे, कटे फ़र तू ही छाया है।

72

सरिता सागर में गिरने को, चहुँ ओर देखती अपनों को।

जिनके साथ गुजारें यह पल, देखे छूटे सब मिटने को।

देख रही यह सूनी अँखियां, नियति यही क्या ढल जाना है।

कांटो की पीड़ा से हमको, कैसे पार यहाँ जाना है।

तर्क नहीं हम कैसे समझे, सोंच-सोंच कर मनुआ पागल।

जो सरिता है वह ही सागर, नहीं निकलता कोई भी हल।

नहीं टूटते सुपने क्षण भर, विचलित होते रहते पल-पल।

कैसे समझाऊँ मैं यह मन, नहीं सूखता अंखियों का जल।

तेरा ही यह नृत्य चल रहा, समझ नहीं मैं पागल होता।

चाहूँ नशा पिला दे अपना, सुधि बुधि विसरा तुझमे खोता।

ईश कृपा तेरी हो जाये, हिय में बस तू ही रम जाये।

टूटें यह फिर सुपने सारे, बहता जाऊँ जित ले जाये।

सांस-सांस में तुझे जपे हम, प्राण पुकारे तुमको हर पल।

इन नयनों से नीर गिरे प्रभु, चरण चढ़ावे सूखे ना जल।

भटक रहा तुमको पाता ना, रो-रो कर बस रह जाता हूँ।

कृपा करो भव पार उतारो, निज को विवश यहाँ पाता हूँ।

तेरी दुनिया रंग-बिरंगी, कहाँ खो गया मेरा सब रस।

तुझ यादों में गुजरें सब दिन, मांगू तुमसे यह दे दे बस।

कैसा यह संसार बनाया, नहीं मुझे कहने का कुछ हक।

जख्मी हो कर घूम रहा हूँ, रोता हूँ गिर मैं रुक-रुक।

अपनी शरण मोहि राख लो, नहीं सहारा कोई भी है।

कैसै तुझे रिझाऊँ निष्ठुर, हम हैं अबल-सबल तू ही है।

दो दिन का जीवन ले आये, कुछ तो इसमें ूल खिला दे।

महकें हम तेरी बगिया में, बसा तुझे हम सभी भुला दे।

74

खिलने से पहले मुझाये, जीवन का संगीत न भाये।

ऐसा निष्ठुर जीवन देकर, पल-पल में हमको तड़ाये।

कहते सब हैं खेल कर्म का, कोई राजा कोई रंक है।

कैसे याद करें अतीत को, हमको कोई बोधा नहीं है।

हम कठपुतली बने नाचते, चाहे जैसे हमें नचाये।

एक चाह बस अब है बाकी, दिल में मेरे तू बस जाये।

हार चुका सब तर्क खो गया, पीड़ देख यह हृदय जल रहा।

बरसे नैना तुझे याद कर, इसमें ही बस चैन मिल रहा।

यही चैन मिल जाये प्रभु तो, कट जाये यह जीवन सारा।

बिन कृपा नहिं कटे यह बन्धान, तू है मेरा प्राण अधाारा।

मेरी प्यास तुम्ही बन जाओ, जग चालक तुम जगत चलाओ।

*अज्ञानी हूँ मफ मुझे कर, भीख भिखारी को दे जाओ।*75

एक गम हो तो कहे हम, गम तो अनेकों हैं यहाँ।

उस चमन को खोजते हैं, गम का निशा ना हो जहाँ।

हम तुम्हारे द्वार आये, थक गये हैं इस जहाँ में।

थाम लो बहियां हमारी, हम देखते हैं शून्य में।

न कोई अपना ठिकाना, सुनता न मेरी जमाना।

तू बता किसको पुकारें, गमों में डूबा ंसाना।

बिन मिलन न बीत जाये, देख लो तुम इक नजर से।

इस जहाँ में हम भटकते, नीर बहते तुझ विरह से।

यहाँ किस्ती डगमगाये, ना किनारा दीखता है।

लाज प्रभु तुम राख लेना, दिल हमारा बैठता है।

जाये यहाँ बढ़ते कदम, सुनता रहूँ वंशी की धुन।

चाह सारी हो विसर्जित, मैं कर तुझे पाऊँ जतन।

76

गीत बनायें प्रभु हम तेरे, मेरा जियरा रमें तुझी में।

जन्म मरण का चक्र भूलकर, जपे नाम तेरा गीतों में।

लहर बनी तेरे सागर की, देखूँ नाचे तू सब घट में।

अहंकार का होय विसर्जन, सब बन्धान से मुक्त बनूं मैं।

अंधाकार से भ्रमित हुआ हूँ, नाचे तू मैं कौन हुआ हूँ।

सुपनों की दुनिया में खोकर, हरपल तुमको भूल रहा हूँ।

छोटी-बड़ी लहर है जग में, अपना-अपना खेल दिखायें।

धूप छांव का खेल-खेल कर, देखत-देखत सब खो जाये।

एक लहर दूजी को देखे, अन्तस में वह नहीं निहारें।

अन्तस देखे दुखड़े खोवें, समझ कहानी जीवन सुधारे।

नहीं जोर कुछ भी इस जग में, सब उसकी मर्जी चलती है।

*बिन हरि कृपा न होवे कुछ भी, बस अखियां हरदम रोती है।*77

हारता हूँ जब जहाँ में, देखता सब लुट रहा है।

तन साया बैरी होता, दूर सब कुछ हो रहा है।

याद आती है तुम्हारी, लिख न पाते तुझे पाती।

इस कलेजे की चुभन बस, हमें है पल में रुलाती।

तुझ दया की हमें चाहत, पा सके तुम्हें ईश हम।

मेरे खिले दिल के सुमन, नहीं फिर कभी होवे गम।

तुम्ही हो मेरा सहारा, कर नहीं मुझसे किनारा।

चाह तेरी का खिलौना, बहती आंसू की धाारा।

जन्म बीते हाय बिछुड़े, किसलिये इस राह गुजरे।

क्यों बनाते हो तमाशा, पथ दिखा दो जन्म सुधारे।

हारे थके बैचेन हम, तुमको निहारें नयन यह।

बांसुरी की धुन सुना दो, लय प्राण होवें तभी यह।

78

भगवन तुम्हारी लीला का, ना पार किसी ने भी पाया।

हारे ;षि मुनि ज्ञानी सारे, सब ही चाहें तेरा साया।

कृपा करो तुम हम बालक हैं, सारे जग का संचालक है।

तैर रहे आंखों में आंसू, पार लगा दे तू खेवट है।

आये बसन्त यदि तू रीझे, पतझड़ मिट जाये जीवन का।

प्यासे दिल की प्यास मिटे तब, हो जायें दर्शन साजन का।

बिन तेरे अंधियारी रातें, सूझे पथ ना पल-पल गिरता।

दया करो करुणा के सागर, नीर नयन से प्रभु जी गिरता।

कितने रंग खिले इस जग में, तेरे बिन यह जियरा तरसे।

मन यह भटक-भटक दुख पावे, प्रियतम मिल जाये तो हरषे।

नाच रहा कण-कण में तू ही, रोता दिल यह क्यों निर्मोही ?

*तेरी छवि बस जाये दिल में, कठिन डगर हो मिलती राही।*79

सुख से जीने की आशा में, हम घूम रहे हैं सब जग में।

कल क्या होगा ना हम जाने, जीते रहते बस सुपनों में।

विषय भोग से तृप्ति न होती, नहीं नाम ईश्वर का लेते।

खुद से नहीं संभलती नैया, बने बावले से हम फिरते।

सोंचा नहीं कभी क्यों आये, लक्ष्य जिन्दगी का ना जाने।

नहीं वासना पूरी होती, पूर्ण वह घट में जो जाने।

सुख-दुख का हम खेल-खेलते, ना जीवन का राज खोजते।

सोंच समझ तू हुआ बावरा, अनजानी सांसों को लेते।

सर्जक कौन यहाँ जो खेला, जीवन यह दो दिन का मेला।

कांटों में भी फूल खिलाकर, दे सुगन्धा वह कैसा छैला।

नमन करें ईश्वर के आगे, बस प्रकाश उससे ही पाये।

नहीं सहारा और जगत में, जान सकें जीवन सुख पाये।

80

स्वास्थ की मिट्टी में मिलकर, करत के बीज यहाँ पलते।

जिनको हम थे देव समझते, वह भी हमको खारे लगते।

जिनकी अंगुली पकड़ चले हम, झटके से उनको छोड़ चले।

सोंचे सुख दे सकते कितना, विगती बातें सब भुला चले।

जिस डाली पर फूल खिला, वह मुरझा उस पर ही जाता है।

सच समझ सके यदि जीवन में, वह अनासक्त फिर बहता है।

जग का नियम जान यह सच है, उठ-2 कर फिर गिर जाना है।

जो पवन खिलाती इस तन को, बस उससे ही उड़ जाना है।

हरि भज हरि भज सब माया है, अन्तिम इसका ही साया है।

मत झांक और की नजरों में, तू सोंच कहाँ से आया है ?

अज्ञात जहाँ से तू आया, अज्ञात जगह पर जाना है।

*अज्ञात हरी से प्रीति लगा, जो छिपा शून्य में जाना है।*81

हरि भज हरि भज वह दे सुवास, जीवन का वह ही है प्रकाश।

विसर नहीं पगले उसको तू, वह ही जीवन का है अकाश।

अन्तस में जब ज्योति जगावे, जब हमको वह राह दिखाये।

वह प्रकाश ही बाहर आये, जियरा उस बिन भटके जाये।

नहीं ठिकाना उस बिन कोई, धूप छांव का खेल खिलाये।

मैं को छोड़ लहर बन जा तू, सागर ही सब नाच नचाये।

जग के आंगन में हम भटके, अन्तस में उससे ही पूछो।

वह दिखायेगा पथ तुमको, बहते आंसू अपने पोंछो।

हरि की हरियाली मिल जाये, हरि को अपने हिया बसायें।

जन्म मरण के सब बन्धान से, हरि ही हमको मुक्त कराये।

चलते जाओ हरि ना भूलो, बेड़ा पार करेगा वह ही।

जीवन दिया वही बस जाने, जीवन का धान है बस वह ही।

82

उठती गिरती लहरें देखो, आता जीव और जाता है।

देख-देख कर मनुआ पागल, नीर बहाता हरदम यह है।

वह देखो उस पार क्षितिज के, बन्शी कोई बजा रहा है।

हरदम नीर यहाँ झरते हैं, प्राण हमारे तड़ रहे है।

सुनूँ नहीं बातें कर पाऊँ, कैसे उसको हाय रिझाऊँ ?

प्रेम पींग बिन मैं प्रियतम के, नहीं गगन में मैं उड़ पाऊँ।

तुम सुन लो न कोई हमारा, रस सूखा जीवन का सारा।

कृपा सिन्धु तुम कृपा करो अब, हार चुका मैं जीवन सारा।

तेरी दया हमें मिल जाये, इस भव से फिर हम तर जायें।

अखियों के तुम नीर देख लो, नहीं और कुछ भी दे पायें।

हम है अबल-सबल तुम ईश्वर, सारे जग के तुम पालक हो।

*नमन करो स्वीकार हमारा, तुम ही तो मेरे सर्जक हो।*83

जीवन में कितने जाल बुने, अन्तिम क्षण देखा ठगे गये।

न वसा सके मोहनी मूरत, संसार छोड़ कर चले गये।

बस जाये हिय तेरी मूरत, दुख पार चली जाये नौका।

संकट हिर सारे कट जायें, तू देख हमें डगमग नौका।

हम शरण तुम्हारी दुख भंजक, तुम दे दो प्रभु अपना अंचल।

अज्ञान तिमिर में घूम रहे, चाहे प्रभु हम तेरा संबल।

इस जग के कर्णधाार तुम्ही, सारी दुनिया के पालक हो।

रोती अंखियां मेरी देखो, मेरे जीवन के सर्जक हो।

जायें कहाँ हम आस तू ही, जीवन के मेरे तुम माली।

सूखी बगिया में ूल खिलें, राजी हो लग जाये लाली।

मंजिल मेरी हो भटक रहा, निज चरणों को धाोने देना।

यह नीर बरसते है मेरे, तुम क्षमा मुझे बस कर देना।

84

इस सारे जग के रखवाले, हम तेरी प्रभु स्तुति करते है।

सुख शान्ति ईश करो वर्षा, तेरे बालक हम सब तो है।

अज्ञान तिमिर में भटक रहे, तुम ही तो हमरी आशा हो।

तुम ज्ञान दीप प्रभु दर्शा दो, करुणा के तुम तो सागर हो।

कांटों से भरी डगरिया है, महके ूलों से उपवन है।

जिस पर हो जाती ईश कृपा, चहुँ ओर बरसता सावन है।

प्यार तुम्हारा प्रभु हम चाहे, सद्कर्मों में बढ़ते जायें।

बन कर महकें पुष्प यहाँ हम, देकर सुवास लय हो जाये।

दूर घृणा के भाव यहाँ कर, तेरी दुनिया में रंग भरे।
नित प्रेम बढ़ाते यहाँ चलें, दुखियों के दुख को दूर करें।

प्रभु मेरे हिय में बसे रहो, अपने चरणों में सदा रखो।

*तुम पार करो मेरी नौका, बहते आंसू हैं ईश लखो।*85

याद करें प्रभु रोवें अंखियां, सफल होय तुमको पा जीवन।

नीर गिराती हैं, यह झर-झर, तुम ही हो मेरे जीवन धान।

जन्मों से मैं घूम रहा हूँ, बिन तेरे मैं तड़ रहा हूँ।

कैसे तुमको पाऊँ प्रियतम, अन्धाकार से घिरा हुआ हूँ।

तेरा कैसे धयान लगाऊँ, मेरे सम्बल मेरे पालक।

तुम ही हो प्रभु मेरे खेवट, स्वामी तुम हो मैं हूँ सेवक।

बीती सदियां तुम ना आये, यह जीवन भी बीता जाये।

लख लो तुम करुणा के सागर, तुम बिन जीया भर-भर आये।

प्रीति न तोड़ो अज्ञानी हैं, भीख प्यार दे तू दानी है।

सुमर-सुमर तुमको खो जाये, यही चाह बस जीवन की है।

जगकर्ता हे ज्ञानपुंज प्रभु, शीश झुकाये यहाँ खड़े हैं।

बहते आंसू स्वीकार करो, पास हमारे नाथ यही है।

86

आवाज तुझे देते, वंशी की सुना दो धुन।

यह प्राण तड़फते है, रोता तुम बिन जीवन।

जंगल में हमें छोड़ा, प्रभु संग तेरा जोड़ा।

ना भूल हमें जाना, क्यों मुख मुझसे मोड़ा।

अज्ञानी बन घूमें, क्या दोष हमारा है ?

तू ज्ञान दीप दर्शा, तू संकट हारा है।

तू पार लगा नौका, डगमग यह डोल रही।

सब टूट रहे सुपने, अंखियां यह तरस रही।

आओ मेरे मोहन, अंधियारा छट जाये।

खुशियों की हो वर्षा, कोयल भी फिर गाये।

हम द्वार खड़े तेरे, ठुकरा न अबल हम है।

*आंखों से नीर बहें, ना देखो तो गम है।*87

तुम्हारा नाम ले कर हरि, सदा बढ़ते ही जायें हम।

हमारे दिल में बस जाना, तो मिट जाये नहीं हो गम।

इन अंखियों में बसे मोहन, चढ़ायें नीर यहाँ तुमको।

भटकते जग के आंगन में, सम्भालों कृष्ण तुम हमको।

सुने हम तेरी वन्शी धुन, सफल हो जाये यह जीवन।

खिवैया तुम ही हो मेरे, नहीं मुझमें कोई भी गुन।

रो-रो कर हम पुकारें हैं, यह नदिया पार हो जाये।

ना जग के रंग जाने हैं, दया चाहें जो मिल जायें।

तुम्हीं माता-पिता मेरे, तुम्ही सर्जक हो मनमोहन।

दिखा दो तुम जो पथ अपना, तो कट जायें सभी बन्धान।

इस जग में शोर कितना है, कहाँ जाती है यह दुनिया।

तेरी यदि जोत जल जाये, मिटे दुख होवे फिर खुशियाँ।

88

मेरे सुख तुम्हीं भगवन, मिटे तुझे याद कर मोहन।

नहीं लगता है दिल मेरा, रिझाऊँ कैसे मैं भगवन।

तू दाता है भिखारी मैं, सदा मांगे मैं करता हूँ।

न रुठो तुम मेरे भगवन, परेशां तुमको करता हूँ।

कहाँ जायें ना दीखे कुछ, मेरा बस नीर बहता है।

हो करुणासिन्धु तुम भगवन, तुम्हें दिल याद करता है।

यहाँ कांटों में हम उलझे, दया तेरी से हम सुलझे।

नहीं दीदार हुआ तेरा, क्यों जीते हम नहीं समझे।

दिखा दो तुम डगर अपनी, यह अंखियां धोय उस पथ को।

मिटें हम इसी डगर भगवन, न दुख हो कोई भी हमको।

तुम्हारी याद है प्यारी, भुलाना कभी नहीं चाहें।

*जनम कितने भी ले भगवन, तुमको खोंजे यही चाहें।*89

भज गोविन्द तुझे प्रभु पायें, तुझमे ही हम जिया रमायें।

कट जायें कर्मों के बन्धान, तेरी शरण प्रभु हम आयें।

पथ नहिं जानूं तुमको मानूं, दीप जला दे हिय में मेरे।

नीर बहाती अंखियां ढूंढे, मेरे प्राण तुझी को टेरे।

मरुस्थल सा जीवन मेरा, हरियाली ना लहराती है।

कैसे मिलो कटें दुख सारे, सांसे सब खोती जाती है।

प्रेम प्याला पी गई मीरा, यादों को ले खोई राधाा।

बरसा प्यार हमारे घट में, पहुँचूं तेरे दर पर सीधाा।

जन्मों की है प्यास हमारी, छिपे कहाँ हो कृष्ण मुरारी।

बहती अंखियां मेरी देखो, फिरुँ यहाँ मैं दर-दर मारी।

हारा थका जगत में डोलूं, काहे तुम बिन नैना खोलूं।

ऐसा जीवन भी क्या जीवन, बिन सांवरिया काहे डोलूं ?

90

तेरी लीला तू ही जाने, कैसे हम तुझको पहचाने ?

पता ठिकाना नहिं तुम्हारा, बन फिरते हैं हम बेगाने।

जियरा रोये दीखे ना कुछ, क्या चाहे हमसे अनजाने ?

ना अनाथ हमको कर जाओ, तेरी दया मिले तो जाने।

पीड़ हरो प्रभु हम जख्मी है, नजरें तेरी क्यों रुठी है ?

तू है सर्जक अवश यहाँ हम, दुख की नदियां क्यों बहती है ?

प्यार जगा दो सब सुख पायें, तेरा उपवन खूब सजायें।

तुझ वन्शी की धुन सुन नाचें, झूम-झूम तेरे गुन गाये।

हारे ;षि मुनि इस दुनिया में, फिर भी पार न पाया तेरा।

मैं अज्ञानी तुझे ढूंढता, पार करो जिय रोता मेरा।

विनती बार-बार हम करते, शीश चरण में प्रभु हम धारते।

*पार लगा दो मेरी नौका, रोवें अंखियां तुमसे कहते।*91

तुझे हम याद करते हैं, नयन से नीर गिरते हैं।

संभालो ईश तुम हमको, यही ;रियाद करते हैं।

चला जाता न हम हारे, सहारे तुम हमारे हो।

तुझे पायें यहाँ कैसे, तुम ही मेरे जीवन हो।

करुँ मैं अर्चना कैसे, नहीं ूलों में खूशबू है।

सुनाते तुम नहीं बन्शी, हमारी बदनसीबी है।

छिपे हमसे हुए क्यों तुम, नहिं हममें कोई भी दम।

कदम यह लड़खड़ाते हैं, तुझे पायें मिटे सब गम।

मैं ढूंढू बन कर पागल, नाचूं मिल जाये साजन।

उठे तब गीत अनहद के, बरस जायें यहाँ सावन।

बुलाते यह नयन मेरे, अन्धोरा मुझको घेरे।

मिले तेरी किरन हमको, कटे दुख जो हमे घेरे।

हरि तेरे ही गुण गाऊँ मैं, तुमसे ही प्रीति बढ़ाऊँ मैं।

जनम-जनम की प्रीति पुरानी, बस इसको ही लहराऊँ मैं।

भक्तों के दुख हरने वाले, शान्ति को बरसाने वाले।

जो भी तेरा नाम सुमरता, जीवन को हर्षाने वाले।

तुम दाता इस जग के पालक, तुम ही हो सबके संहारक।

अंधियारें में घूम रहे हैं, दिशा हमें दो तेरे सेवक।

जन्म-मृत्यु का चक्र चल रहा, खोजे मनुआ कहाँ छिप रहा ?

जीवन के बस कुछ पल बाकी, इन नयनों से नीर बह रहा।

सकल सृष्टि करती परिक्रमा, ;षी मुनी सब धयान लगाते।

मेरी नौका पार लगा दे, तुझे याद कर सब सुख पाते।

कृपा तेरी मिल जाये स्वामी, जीवन में फिर बरसे खुशियां।

*आओ मिलो रो रही अंखियां, पार नहीं होती यह नदियां।*93

कहाँ छिपे तुम मेरे मोहन, रिमझिम-रिमझिम नयना बरसे।

डर लागे है छतिया धाड़के, तुझ दर्शन को अंखियां तरसे।

मूरत हिय तेरी बस जाये, कट जाये दुर्गम पथ सारा।

कैसे तुझे रिझाऊँ ईश्वर, नहीं जानता मैं हूँ हारा।

मेरे स्वामी अन्तर्यामी, तुम बिन सारा जीवन खारा।

जतन करुँ सभी सि) तुम्हीं, करो कृपा पहुँचूं दरबारा।

तम को दूर करो जीवन में, दया करो प्रभु मुझको लख लो।

अज्ञानी हूँ जान क्षमा दो, द्वार पड़ा मुझको अपना लो।

ज्ञानी ना पर तेरा बालक, तू ही तो हैं मेरा पालक।

तुम बिन दर्द कहें हम किससे, सुन लो तुम जग के संचालक।

टप-टप गिरते नीर आंख से, हम हाथ जोड़ स्तुति करते हैं।

नहीं रिझाना तुमको जाने, कपित जतन ईश करते है।

94

हरि तुम बिन न कोई सहारा, कैसे आऊँ तुझ दरबारा ?

पल-पल अंखियां नीर गिरायें, तुम मेरे जीवन आधारा।

पा जाऊँ चरणा रज तेरी, मिट जाये जन्मों की तेरी।

प्यासा दिल यह तुझे बुलावे, नहीं करों प्रभु अब तुम देरी।

जपूं तुझे पथ देखें अंखियां, बीतेगी कब काली रतिया।

सुन वन्शी की धुन खो जाऊँ, सफल होय जीवन की कड़ियाँ।

चलते संभल-संभल गिर जाते, मिलूं तुझे मैं विरह जगा दे।

जीवन के आनन्द तुम्ही हो, अपनी छाया में रहने दे।

तेरी कोई थाह न पाये, कृपा होय तुझमें घुल जाये।

अनहद ही बस तेरा गूंजे, दुख का निशा नहीं गिर पाये।

उठती गिरती जग में लहरें, प्रभु मेरे हिय में बस जाओ।

*निरख तुझे सब सुधा-बुधा भूलूं, नैया मेरी पार लगाओ।*95

घूमें हम कितनी जगह यहाँ, मिल जाये कूल हमें कोई।

पर ठोकर खाते बीत गया, अंखियां जी भर-भर कर रोई।

इस प्रीति डगर की रीति अलग, यादें भी सुख दे जाती हैं। अच्छा लगता जीना मरना, इसमें सुवास ही आती है।

सांसों में मेरे बसे रहो, अंखियां चाहे रोये कितनी।

मिट जाये प्रीति लिये तेरी, अच्छी यह लगती है इतनी।

अनजान सही पर नाम सही, तुमको पुकारते प्रभु हम हैं।

हम हैं अबोधा कुछ नहीं होश, प्यारा लगता तेरा गम है।

न भूलूं तुम्हें एक पल मैं, नहीं वंचित कर शरणा ले लो।

यह जनम मरण का चक्कर है, समझूं नहिं आंसू को लख लो।

नदिया गुन गाते पार करें, तुमसे ही बढ़ती प्रीति चले।

यह जीवन तुझे समर्पित हो, तेरी मर्जी से बहे चले।

96

कितना बीता समय यहाँ पर, मोहन मेरे क्यों ना आये।

बीती जाती जीवन संधया, नयना झर-झर नीर गिराये।

अबल हम हैं पथ को न जाने, अनजानी दुनिया में ऊबे।

एक सहारा पाये तेरा, दुख के दरिया में ना डूबे।

करो कृपा हम शरण पड़े हैं, हरदम तुमको ही भजते हैं।

चैन कहीं ना जग में आता, तीर कलेजे चुभे पड़े हैं।

कर्मों की जंजीर में जकड़े, अंधियारे में घूम रहे हैं।

तेरी एक किरन पाने को, जन्मों से हम भटक रहे हैं।

मात-पिता सर्जक तू ही है, ज्ञान पुंज जग का पालक है।

अगम अगोचर पार न तेरा, तुम्हें पायें प्यास यही है।

अंखियां रोवे तुझे पुकारें, सुन लो मेरे जीवन रक्षक।

इस जीवन की बगिया महके, मुझे बना लो अपना सेवक।

97

हरि तुम बिन न कोई सहारा, डूबे नैया कर दो पारा।

जनम-जनम से भटक रहा हूँ, मेरे जीवन के आधाारा।

अंखियां तेरी बाट निहारें, ढरक-ढरक यह नीर गिरावें।

वन्शी बजैया रास रचैया, काहे मेरा जिया जलावे ?

पाऊँ तुमको जीवन महके, मरुस्थल यह तुझी को तरसे।

रिमझिम-रिमझिम बरसो मोहन, प्यास बुझे जीया हि हरषे।

सुनो विनती तुम ही सुनोगे, नहीं और है जग में कोई।

ूल अर्चना के भी सूखे, ूट-ूट कर अंखियां रोई।

छिपे हुए मुझसे क्यों मोहन, मेरे जीवन के मन भावन।

मिले चरण रज हमको तेरी, हो जाये यह जीवन पावन।

करो कृपा ना देर लगाओ, मेरे हिय में तुम बस जाओ।

हरपल निरखूं रुप तुम्हारा, सारी प्रभु जी पीड़ मिटाओ।

98

नयना बरसे तुमको तरसे, छिपे कहाँ हो मेरे मोहन।

तेरी मुरली धुन सुनने को, विकल प्राण मेरे मन मोहन।

तुमसे नेह बढ़े सुख उपजे, सूखी बगिया सावन बरसे।

तुम बिन कटे न मेरी रैना, तुमसे मिलने को जिय तरसे।

मन्दिर-मन्दिर दीप जले हैं, ज्ञानी ;षि-मुनि बस पूजें है।

चलूं डगर पर रीति न जानूं, आन मिलो हम यहाँ बुझे है।

घूम रहे तेरी धारती पर, हमें प्यार से लख लो मोहन।

जीया मेरा भर-भर आवे, प्रीति बढ़ाओ मुझसे मोहन।

तुमको प्राण पुकारें हरपल, रोम-रोम में तुम बस जाओ।

मिट जाऊँ मैं तुझ वियोग में, खूब रुलाओ ना ठुकराओ।

सांस जपे बस नाम तुम्हारा, हमको नहीं कोई सहारा।

*बैठ चरण में हम प्रभु रो ले, इतना तो कर सृजन हारा।*99

जग के रखवाले ओ मोहन, करो कृपा महके यह जीवन।

अज्ञानी हूँ दीप जला दो, जगमग तेरा करता गुलशन।

तेरी महिमा अपरम्पारा, नयनों से बहती है धारा।

प्यार हमें मिल जाये तेरा, सुफल होय यह जीवन सारा।

घट-घट वासी अन्तर्यामी, दीखे ना तू नयन उदासी।

भटक रहे जग के आंगन में, हमें सहारा दो ब्रजवासी।

दुस्तर मार्ग पथ नहीं जानूं, विनती करुँ तुझे मैं मानूं।

मेरी अंखियां झर-झर आवे, बता तुझे कैसे पहचानूं ?

जग के पालक तेरे सेवक, सदा तुम्हारे ही गुन गायें।

जग की भूल भुलैया में हम, नहीं कभी ईश्वर खो जाये।

विनय करो स्वीकार हमारी, दाता तू क्यों झोली खाली।

जीवन के कुछ जो पल बाकी, प्यार हमें दे दे तू माली।

100

जाऊँ कहाँ जगत के पालक, भटक रहा मैं तेरा बालक।

रो-रो अंखियां हार गई है, कहाँ छिपे हो मेरे सर्जक।

कण-कण में तुम बसे हुए हो, कटे नहीं यह काली रैना।

हमें नजर ना आते छैला, आतुर सुन लूँ तेरे बयना।

दर-दर डोलें हुए भिखारी, क्यों ना अपने नयना खोले?

कैसे तुझे रिझायें प्रभु जी, नीर भरी अंखियां यह डोले।

पथ दे दो तुझ दर तक आऊँ, नयनों से मैं नीर चढ़ाऊँ।

जनम-जनम का प्यासा मनुआ, बैठ चरण में प्यास बुझाऊँ।

बनूं योग्य हो तिमिर दूर, तुझे पुकारुँ जियरा कांपे।

करुणा तेरी को पहचाने, कैसे हम प्रभु निज को नापे।

जग के वैभव रास न आवें, तुमको मेरे प्राण पुकारें।

बीत न जायें यह थोड़े पल, पांव पडू मैं तुम्ही सहारे।